ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

कार्तिक २०८२ नवम्बर २०२५

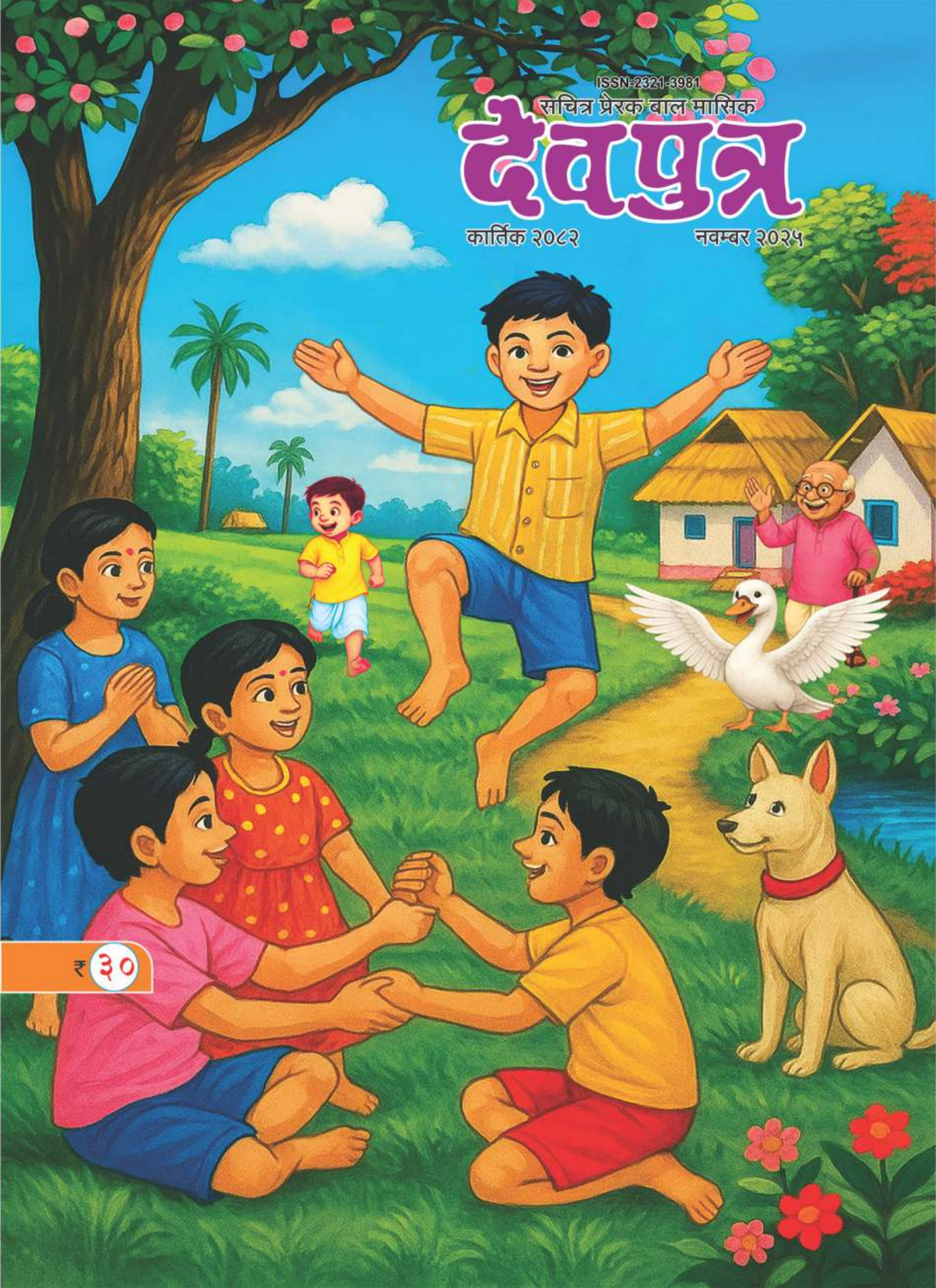

₹ ३०

मध्यप्रदेश सरकार का संकल्प

अक्षय जल, सुरक्षित कल

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

जल गंगा संवर्धन अभियान

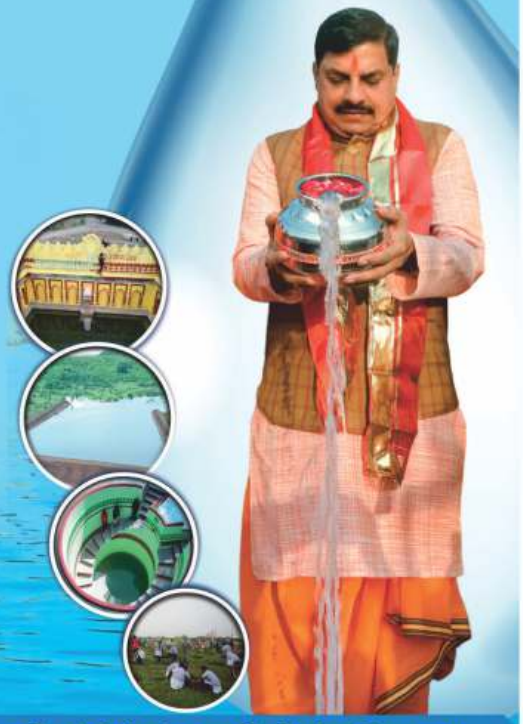

'जल की हर बूंद में आने वाले कल का भविष्य छिपा है। इसलिए इस अमूल्य धरोहर की किसी भी मूल्य पर रक्षा करना हमारा दायित्व है।'

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

जल संरक्षण का 'जन संकल्प'

जल संचय में वृद्धि

- ₹2048 करोड़ लागत के 83 हजार से अधिक खेत तालाबों का निर्माण पूर्ण, जिससे खेत का पानी खेत में सिंचित होगा
- ₹254 करोड़ लागत से 1 लाख से अधिक कूप रीचार्ज
- अमृत सरोवर 2.0 के तहत ₹ 354 करोड़ लागत से 1 हजार से अधिक नए अमृत सरोवरों का निर्माण
- शहरी क्षेत्रों में 3300 से अधिक जल स्त्रोतों का पुनर्जीवन, 2200 नालों की सफाई एवं 4000 वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण पूर्ण

जनभागीदारी

- 40 लाख लोगों की भागीदारी से 5 हजार से अधिक जल स्त्रोतों का हुआ जीर्णोद्धार
- My Bharat पोर्टल के माध्यम से 2.30 लाख से अधिक जलदूत बनाए गए
- ग्रामीण क्षेत्रों में पानी चौपाल का आयोजन

तकनीकी नवाचार

- GIS आधारित SIPRI सॉफ्टवेयर के उपयोग से जल स्त्रोतों का चयन एवं AI आधारित मॉनिटरिंग की गई
- नर्मदा परिक्रमा पथ एवं अन्य तीर्थ मार्गों के डिजिटलीकरण के जरिए श्रद्धालुओं की सुविधाओं का रखा जा सकेगा ख्याल

पर्यावरणीय एवं कृषि प्रभाव

- 57 प्रमुख नदियों में मिलने वाले 194 से अधिक नालों का चिह्नांकन एवं उनके शोधन के लिए योजना तैयार
- जैव विविधता संरक्षण हेतु घड़ियाल और कछुओं का किया गया जलावतरण
- 145 नदियों के उद्गम क्षेत्रों को चिन्हित कर हरित विकास हेतु योजना तैयार
- अविरल निर्मल नर्मदा योजना में 5600 हेक्टेयर में पौधरोपण प्रारंभ
- वन्य जीवों के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु 2500 से अधिक तालाब, स्टॉप डैम का निर्माण
- पौधरोपण हेतु लगभग 6 करोड़ पौधों की नर्सरी विकसित

वॉटरशेड हेतु कार्य

- ₹1200 करोड़ लागत की 91 वॉटरशेड परियोजनाएं स्वीकृत, 5.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को मिलेगी सिंचाई सुविधा
- 9000 से अधिक जल संरक्षण संरचनाओं के जरिए किसानों को 1 वर्ष में दो से तीन फसलों का मिल रहा लाभ

R. O. No. D16105/25

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक २०८२ ▪ वर्ष ४६
नवम्बर २०२५ ▪ अंक ५

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२५०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

उसका बचपन ही था जब ध्रुव निकल पड़ा था तपस्या करके नारायण से अचल पद पाने। उसका भी बचपन ही था जब दैत्यराज हिरण्यकश्यपु के घोर अत्याचारों का सामना अपने शील, विनय, सदाचार और भक्ति से करते हुए खम्बे से नृसिंह को प्रकटा लिया था प्रह्लाद ने। तब नचिकेता भी बच्चा ही था पर यमराज के द्वार से भी ज्ञान प्राप्त करके ही लौटा था।

लवकुश भी बचपन से ही नारी सम्मान के लिए विश्व में अजेय सेना के सामने साहस से डटे रहना सीख गए थे। हनुमान से भगवान सूर्य से उनके रथ के सामने उलटी चाल से निरंतर चलकर ज्ञान प्राप्त किया तब बचपन ही था उनका। बचपन में ही श्रीगणेश ने अपना शीश कटाकर भी माँ की आज्ञा के पालन और मातापिता की परिक्रमा को पृथ्वी की परिक्रमा के तुल्य सिद्ध करने की वीरता और बुद्धिमत्ता बताई थी।

चन्द्रगुप्त बच्चा ही था जब चाणक्य ने उसे गढ़ा मगध की अन्यायी सत्ता पलट देने के लिए। शिवाजी ने बालपन में ही स्वराज्य की प्रतिज्ञा कर ली थी और स्वराज्य का तोरण भी बाँध दिया था पहला किला जीत कर। लक्ष्मी बाई यानी नन्ही मनु ने बचपन में ही बरछी, तीर, कृपाण, कटारी को अपनी सहेली बना लिया था। नानासाहब की किशोरी मैना ने स्वराज्य यज्ञ में प्रत्यक्षत: अपनी देह स्वाहा कर क्रांति की लौ बढ़ा दी थी।

खुदीराम बोस, कालीबाई, बाजी राऊत, सुनीति घोष, राजेन्द्र नीलकंठ कितने नाम याद करने सब बच्चे ही थे जो क्रांति की थाली में अपने प्राण-दीप जला भारतमाता के लिए स्वतंत्रता की आरती उतार गए।

बच्चो! बचपन के प्रत्येक दिन को बालदिवस बनाने के लिए और बच्चों की भाँति ही खेलते-खाते बचपन बिताते हुए, भी ये अपने जीवन में ऐसे सद्गुण जोड़ते गए कि आज इन बच्चों के नाम भारत के अमर इतिहास की अमिट गाथा बन गए हैं। इन सबके सामने एक **लक्ष्य युक्त बचपन** था। लक्ष्य केवल अपना व्यक्तिगत जीवन सुखी बनाने का नहीं सारे समाज, राष्ट्र व मानवता के कष्ट मिटाने का था।

क्या आप भी ऐसे बच्चों की परंपरा में सम्मिलित हो सकते हैं? अवश्य हो सकते हैं, बस ठान लीजिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- हौसला -रीना सोनालिका ३४
- श्रेया की शपथ -रंदी सत्यनारायण राव ३६

छोटी कहानी

- पुस्तकों का मेला -संध्या गोयल 'सुगम्या' ०५
- निश्चय -विमला रस्तोगी १६
- साइड -माणकचन्द सुथार ३८

बौद्धिक क्रीडा

- पहेलियाँ -घनश्याम मैथिल 'अमृत' ०६
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी १९

आलेख

- स्वधर्मे निधनं श्रेय: -गोपाल माहेश्वरी १२
- लाचित् बोरफुकन -तारादत्त जोशी २०

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे -देवांशु वत्स २५
- नहले पे देहला -संकेत गोस्वामी ३९

नाटक

- घर बाहर हो स्वच्छ -गिरिजा कुलश्रेष्ठ ४४

कविता

- धन्य धन्य श्रीनानक देव - १७
- धूप -राजेन्द्र 'निशेश' २१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ०७
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी १८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी २४
- छ: अँगुल मुस्कान - ३५
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ४०
- पुस्तक परिचय - ४३

सूचना

देवपुत्र का दिसम्बर अंक संघ परिचय अंक के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पर चित्रमय विशेष प्रस्तुत होगी। नियमित ग्राहकों के लिए इस अंक कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं होगा। किन्तु अतिरिक्त अंक मंगाने पर बीस रुपये प्रति अंक के मान से अग्रिम शुल्क जमा करना होगा।

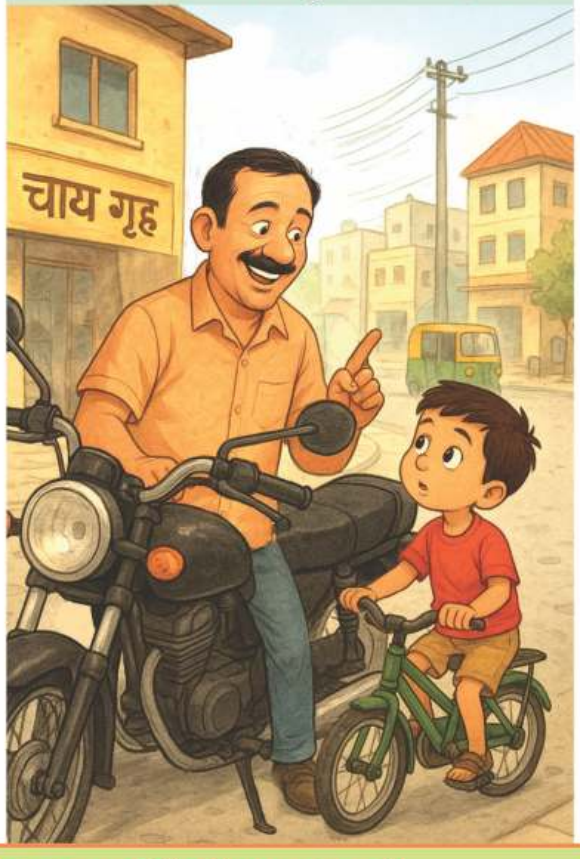

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

पुस्तकों का मेला

– संध्या गोयल 'सुगम्या'

विराट सोसाइटी के उद्यान में आज बहुत सारे बच्चे एकत्रित थे। विद्या और समर्थ दोनों भाई–बहन जो सातवीं और आठवीं के विद्यार्थी थे, उन्होंने सब बच्चों के सम्बोधित करते हुए कहा।

''हमारे प्यारे साथियो! हम दोनों ने सर्दी की छुट्टियों में पुस्तकों का मेला लगाने की सोची है। इसीलिए तुम सबको यहाँ बुलाया है।''

''पर मेले के लिए तो बहुत सारी पुस्तकें चाहिए होंगी। वे कहाँ से आएँगी?'' पारस ने कहा।

''यदि हम पुस्तकें खरीदकर लाएँगे, तो इतने सारे रुपए कहाँ से आएँगे? रिया ने पूछा।

फिर और बच्चे भी तरह–तरह के प्रश्न करने लगे। तब समर्थ ने उन्हें शान्त करते हुए बैठ जाने को कहा। जब सब बच्चे बैठ गए तो विद्या ने सारी योजना बच्चों को समझाई। समर्थ ने भी उसका साथ दिया। सब सुनने के बाद उन्होंने बच्चों से पूछा– ''बोलो, सबको पसन्द आई यह योजना?''

सब बच्चों ने एक साथ बोला– ''हाँ! बहुत पसन्द आई।''

बस फिर क्या था। सब बच्चे तैयारी में लग गए। जिन बच्चों के घर में बच्चों वाली छोटी–छोटी मेज–कुर्सियाँ थीं, वे उन्हें ले आए। कुछ बच्चों ने अपने क्राफ्ट के सामान से वहाँ कुछ सजावट की। कुछ ने अपने छोटे से श्यामपट पर 'पुस्तकों का मेला' लिखकर उद्यान के द्वार पर लगा दिया। कुछ ने सुंदर चित्र बनाकर उद्यान में मेले वाले स्थान पर लगा दिए।

और फिर सब बच्चों ने अपने–अपने घर से बच्चों की प्यारी–प्यारी रंग–बिरंगी पुस्तकें लाकर दीं। कोर्स (विषय) की पुस्तकें लाने के लिए मना कर दिया गया था। सभी पुस्तकें या पत्रिकाएँ बच्चों की कहानी, कविता आदि की थीं।

अब पूरी सोसाइटी के बच्चे और बड़े सबको इस मेले में आने का निमंत्रण दे दिया गया था। एक साथ भीड़ न हो जाए, इसलिए सबको फ्लैट नंबर के अनुसार अलग–अलग समय पर बुलाया गया था।

योजना यह थी कि पुस्तक जिस बच्चे की थी, उसके नाम की चिट लिखकर उस पर पुस्तक रख दी गई थी। पुस्तक का मूल्य था एक और पुस्तक। यानी एक पुस्तक लो और दूसरी पुस्तक दो। यही बात बाल पत्रिकाओं के लिए भी थी।

सबको व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से सारी योजना समझा दी गई थी। इसलिए सब लोग अपने साथ पुस्तकें लेकर आए। जिसको भी कोई पुस्तक खरीदनी होती, वह उस पुस्तक को लेकर उसके स्थान पर दूसरी पुस्तक रख देता था। बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी यह योजना बहुत पसन्द आ रही थी। सब अपनी पढ़ी हुई पुस्तक देखकर उसके बदले में अपनी बिना पढ़ी पुस्तक बड़े आनंद से लेकर जा रहे थे। बहुत से लोग बच्चों के इस अनोखे मेले की फोटो क्लिक करना भी नहीं भूले थे। ये फोटो जब दूसरी सोसाइटी के समूह तक पहुँचेगी, तो उन्हें भी ऐसा मेला आयोजित करने की प्रेरणा मिलेगी।

संध्या सात बजे तक मेले में अधिकांश पुस्तकें अदला–बदली हो चुकी थीं। बच्चे अपनी सफलता से बहुत उत्साहित थे। शाम को सोसाइटी के अध्यक्ष और मंत्री भी आए। उन्हें बच्चों का यह अनोखा मेला बहुत पसंद आया। उन्होंने सोसाइटी की ओर से सभी आयोजक बच्चों को बीच फल वितरित करवाए। सभी बच्चे फल खाकर दोगुने उत्साह से काम में जुट गए।

मेले की समाप्ति की घोषणा के साथ ही सब बच्चों को उनकी स्वयं की पुस्तकों के बराबर की गिनती में दूसरी पुस्तकें मिल चुकी थीं।

सब बहुत प्रसन्न थे। घर जाते–जाते सब विद्या और समर्थ को धन्यवाद कहना नहीं भूले, जिनकी योजना से आज सब बच्चों को इतना बढ़िया मेला आयोजित करने का अवसर मिल पाया था।

– गाजियाबाद
(उ. प्र.)

बौद्धिक क्रीडा

पहेलियाँ

– घनश्याम मैथिल 'अमृत'

(१) आजाद था आजाद हूँ, आजाद रहूँगा का नारा,
दे मूँछों पर ताव शत्रु को, था किसने ललकारा ?

(२) इंकलाब जिंदाबाद, यह नारा खूब लगाया,
फाँसी के फंदे को चूम, सरदार कौन मुस्काया।

(३) तुम मुझे खून दो दोस्त, मैं दूँगा तुम्हें आजादी,
देश की खातिर किस नेता ने, मित्रो ! करी मुनादी ?

(४) यह स्वराज है मेरा, जन्म सिद्ध अधिकार,
इसे मैं लेकर रहूँगा, दी किसने ललकार ?

(५) मेरा रंग दे बसंती चोला सुन, गोरों का भागा भूत,
नाम बताओ बच्चों उनका, वे कौन थे वीर सपूत ?

(६) बुरा न देखो बुरा सुनो न, कभी बुरे न बोलो बोल,
तीन थे बंदर जिनको प्यारे, वह कौन पुत्र अनमोल ?

– भोपाल (म. प्र.)

उत्तर– १) बहादुर आजाद, २) सरदार भगत सिंह, ३) नेताजी सुभाषचंद्र बोस, ४) लोकमान्य तिलक, ५) राम प्रसाद बिस्मिल, ६) महात्मा गाँधी।

हिंदी बाल साहित्य के एंडरसन : डॉ. मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

डॉ. मस्तराम कपूर 'उर्मिल' बाल साहित्य के उन अग्रदूतों में प्रमुख हैं जिन्होंने बाल साहित्य की दिशा को सुनिश्चित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उन्होंने बाल साहित्य का सृजन भी किया व उसके पुष्ट सिद्धांत भी निर्धारित किए। कम ही लोग यह तथ्य जानते हैं कि हिंदी बाल साहित्य में पी–एच.डी.उपाधि हेतु शोध कार्य के लिए सर्वप्रथम अनुमति उर्मिल जी को ही मिली थी। उन्होंने बालक और उसके साहित्य पर केन्द्रित समीक्षात्मक पत्रिका 'बच्चे और हम' का संपादन भी किया।

उर्मिल जी का जन्म २२ दिसम्बर १९२६ (अभिलेखों में ०४.०८.१९२४) को हिमाचल प्रदेश के सकड़ी नामक गाँव में हुआ। उनके पिता चिंतराम और माता का नाम लक्ष्मीदेवी था। उनकी बाल्यावस्था बड़े ही संघर्षों में बीती। वे प्रकृति प्रेमी थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। उन्हें हिन्दी, उर्दू और संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। हाईस्कूल करने के बाद उनको नौकरी और व्यक्तिगत छात्र के रूप में पढ़ाई साथ–साथ की। उन्होंने १९६८ में सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात से 'हिन्दी बाल साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन' विषय पर पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त की। उनके शोध प्रबंध का पुस्तक रूप में प्रकाशन भी हुआ है।

उन्होंने बैंक में लिपिक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय में अनुसंधान सहायक और दिल्ली प्रशासन में सूचना अधिकारी जैसे पदों पर रहते हुए अपनी साहित्यिक अभिरुचि को भी बनाए रखा। वे दिल्ली (मासिक) के संपादक भी रहे। इस पत्रिका का अक्टूबर–नवम्बर १९७९ में प्रकाशित बाल विशेषांक तो आज भी आदर सहित याद किया जाता है। उन्होंने बाल साहित्य की समीक्षात्मक पत्रिका 'बच्चे और हम' का भी संपादन किया।

उर्मिल जी ने १९५१ से लेखन प्रारंभ किया। उनकी पहली बाल कहानी 'माँ को न बताना' मनमोहन में प्रकाशित हुई थी। मनमोहन के सम्पादक ने उन्हें आशीर्वाद दिया था कि तुम भविष्य में हिंदी के हैंस क्रिश्चियन एंडरसन बनोगे। नाक का डॉक्टर उनकी क्लासिक पुस्तक है जो इमरजेंसी के दिनों में प्रतीकात्मक रूप में लिखी गई थी वे कहते थे, बाल साहित्य ही ऐसी विधा है जिस पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता विश्व का बहुत सा बाल साहित्य लक्षित साहित्य है बहुत–सी रचनाएँ अपने समय की तानाशाही और विद्रूप राजनीति के विरोध में चूहा, बिल्ली जैसे प्रतीकों के द्वारा लिखी गईं बाल साहित्य

केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं लिखा गया। यह विभिन्न अवसादों से मुक्ति का साहित्य भी है।

उर्मिल जी समर्पित भाव से निस्पृह लेखन के पक्षधर थे उनकी मान्यता थी, साहित्यिक गुटबाजी से तात्कालिक चर्चा भले हो जाए लेकिन आप कालजयी नहीं हो सकते। हिंदी में बहुत सारा बाल सृजन सामूहिक लेखन की प्रक्रिया का परिणाम है जिसकी चर्चा कराई जाती है पुस्तकों को प्रोमोट कराया जाता है।

कपूर जी ने बाल एवं प्रौढ़ साहित्य में मौलिक लेखन के अतिरिक्त अनुवाद के क्षेत्र में भी कार्य किया उन्होंने 'जागृति' और 'स्कूल मास्टर' फिल्मों के संवाद भी लिखे।

उनकी लोकप्रिय बाल पुस्तकें हैं– किशोर जीवन की कहानियाँ, १९५४ (दो भाग), मुँह माँगा ईनाम, १९६८, निर्भयता का वरदान, १९६९, दंड का पुरस्कार, १९६९, सहेली १९७०, चोर की तलाश, ऐंगा–बैंगा, १९७३, बेजुबान साथी, १९८२, आजा–होजा १९९० (बाल कहानियाँ), नीरू और हीरू १९७१, सपेरे की लड़की १९७३, भूतनाथ १९८१, सुनहरा मेमना १९८२ (बाल उपन्यास), बच्चों के नाटक १९७०, पाँच बाल एकांकी १९७५, पाँच बाल नाटक १९८२ (बाल नाटक)।

उनके द्वारा अनुदित 'नाटकों के देश में' जैसी पुस्तक तो बाल साहित्य जगत में दुर्लभ है, इसमें एशिया और प्रशांत क्षेत्र के १४ देशों भारत, आस्ट्रेलिया, बर्मा, चीन, इंडोनेशिया, ईरान, जापान, मलेशिया, नेपाल, फिलिपीन्स, कोरिया गणराज्य, सिंगापुर, श्रीलंका और थाईलैंड के चर्चित बाल नाटक संकलित हैं। इसमें नाटकों के मंचन हेतु वेशभूषा और मंच–सज्जा संबंधी अन्य आवश्यक तकनीकि निर्देश भी दिए गए हैं।

यह अच्छी बात है कि उर्मिल जी की श्रेष्ठ पचास बाल कहानियों का संग्रह 'बाल कथा निधि' और उनके समस्त बाल उपन्यासों एवं नाटकों का संग्रह 'पाँच उपन्यास, पन्द्रह नाटक' नाम से १९९८ में प्रकाशित हो चुका है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उन्हें 'आचार्य कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान' प्रदान किया था।

हिंदी के इस अनन्य रचनाकार का २ अप्रैल २०१३ को दिल्ली में निधन हो गया। आइए, उनका एक रोचक बाल एकांकी पढ़ते हैं–

कहानी

शोर

पात्र–

कैलाश, तनु, अंजु, मंजु।

पिताजी, माँ, इंस्पेक्टर लाला दीनानाथ।

(एक साधारण मकान का कमरा। एक कोने में रैक पर पुस्तकें अस्त–व्यस्त पड़ी हैं। मेज पर पुस्तकें, पतंग की चरखी, दवात–कलम, एक–दो खिलौने आदि बिखरे हैं। फर्श पर बच्चों के जूते आदि भी पड़े हैं। घर का और सामान भी कमरे में मौजूद है किंतु मुख्य रूप से यह बच्चों का ही कमरा लगता है। पर्दा उठते ही कमरा खाली दिखाई पड़ता है, किंतु कुछ देर बाद ही बगल के दरवाजे से चार बच्चे आते हैं। कैलाश इन सबमें बड़ा है, इसकी उम्र दस वर्ष है। तनु, अंजु और मंजु उसकी छोटी बहनें हैं जिनमें तनु सबसे बड़ी और मंजु सबसे छोटी है।)

कैलाश– हम तो पतंग उड़ाने जाएँगे। मेरे पास पैसे हैं। मैं नई पतंग लूँगा। तनु तुम मेरे साथ चलोगी ?

तनु– कहाँ ?

कैलाश– ग्राउंड में बड़ा मजा आएगा।

तनु– मुझे भी उड़ाने दोगे ?

कैलाश– हाँ हाँ! पहले मैं उड़ाऊँगा' फिर तुम उड़ाना।

अंजु– मैं भी चलूँगी।

कैलाश– नहीं! हम मंजु को नहीं ले जाएँगे। इसे बाहर लू लग जाएगी।

मंजु– मैं तो जाऊँगी।

कैलाश– एक थप्पड़ मारूँगा।

मंजु– (चिल्लाकर) पिताजी! कैलाश मुझे पीट रहा है। (इतने में उनके पिताजी कमरे में आते हैं।)

पिताजी– तुम लोग क्यों इतना शोर मचा रहे हो?

मंजु– पिताजी! कैलाश, तनु और अंजु मैदान में खेलने जा रहे हैं। मुझे कहते हैं तुम मत जाओ।

पिताजी– कौन जा रहा है इस समय खेलने? देखते नहीं बाहर लू चल रही है? थोड़ी देर सो जाओ।

कैलाश– तो चुपचाप बैठे रहो। किसी ने शोर मचाया तो कान पकड़कर दरवाजे से बाहर कर दूँगा।

(कैलाश, तनु आदि एक–दूसरे की ओर देखते हैं।)

मंजु– पिताजी! फिर तो इन्हें मजा आ जाएगा। ये लोग मैदान में भाग जाएँगे।

पिताजी– नहीं–नहीं मैं रस्सी से बाँधकर तुम्हें धूप में खड़ा करूँगा समझे? (पिताजी दूसरे कमरे में चले जाते हैं। कुछ देर तक चारों में कोई बातचीत नहीं होती फिर कैलाश गेंद निकालकर खेलने लगता है।)

कैलाश– तनु! तुम खेलोगी मेरे साथ?

अंजु– मैं भी खेलूँगी।

मंजु– पिताजी ने कहा है– 'चुपचाप बैठो। खेलोगे तो मैं पिताजी से कह दूँगी।

तनु– आओ कैलाश! हम चोर–सिपाही खेलेंगे।

मंजु– हमको नहीं खिलाएँगे हम गड़बड़ खूब

मचाएँगे (गाते हुए झूमने लगती है।)

कैलाश– (मंजु को एक घोल जमाकर) बोल अब मचाएगी गड़बड़?

मंजु– (चिल्लाकर) पिताजी! कैलाश फिर... मुझे पीट रहा है।

(माँ रसोई घर में सफाई का काम छोड़कर कमरे में आती है।)

माँ– यह क्या हो रहा है? तुम लोग किसी को घड़ी भर आराम नहीं करने दोगे?

मंजु– माँ! कैलाश मुझे बार-बार पीटता है।

माँ– क्यों कैलाश! यह क्या बात है? अपने से छोटों को पीटते तुम्हें शर्म नहीं आती?

कैलाश– पिताजी भी तो हमें पीटते हैं। शाला में मास्टरजी भी छोटे लड़कों को पीटते हैं।

माँ– (मुस्कराकर) लेकिन वह तो तुम्हें समझाने के लिए ऐसा करते हैं।

कैलाश– मैं भी मंजु को समझा रहा था।

मंजु– मैं तो अपने से छोटों को कभी नहीं पीटती बस बड़ों को ही पीटती हूँ।

माँ– (हँसकर) तुम बहुत अच्छा करती हो। अच्छा भाई! अब मेहरबानी करके यहाँ शोर मत मचाना। उन्हें घड़ी भर आराम करने देना। इस गरमी में पंछी-पखेरू भी अपने-अपने कोटरों में आराम करते हैं। तुम भी सो जाओ।

कैलाश– लेकिन माँ! इस समय नींद नहीं आती।

माँ– तो चुपचाप बैठे रहो।

तनु– हम चुपचाप बैठकर थक नहीं जाएँगे?

माँ– अच्छा तो चुपचाप खेलो। बस शोर मत मचाना। मैं बरतन माँज कर आती हूँ और फिर तुम्हें कहानी सुनाऊँगी। (माँ रसोईघर में जाती है और उसके जाते ही सभी बच्चे 'ओए, ओए' हम कहानी सुनेंगे... हम कहानी सुनेंगें गाते हुए भांगड़ा नाच करने लगते हैं। पैरों के धमाकों और 'ओए ओए' की आवाजों से कमरा गूँजने लगता है। कुछ देर बाद माँ फिर वापस आ जाती है।)

माँ– अरे अरे! मैंने कहा था शोर मत मचाना और तुम लोगों ने भांगड़ा शुरू कर दिया। (बच्चे नाच बंद करके चुपचाप खड़े हो जाते हैं।) निचले मकान वाले हर रोज शिकायत करते हैं कि तुम लोग उन्हें आराम नहीं करने देते।

कैलाश– लेकिन हम तो नीचे जाते ही नहीं।

तनु– हम कभी भी नीचे जाकर शोर नहीं करते।

माँ– हाँ! लेकिन तुम यहाँ जोर-जोर से नाचोगे-कूदोगे तो नीचे आवाज नहीं होगी। सारा फर्श बोल रहा था।

मंजु– तो हम क्या करें?

अंजु– हम अपने घर में भी नहीं खेल सकते।

माँ– खेल सकते हो लेकिन ऐसे खेलो कि दूसरों को कष्ट न हो। इस समय सभी लोग अपने-अपने घरों में आराम करते हैं।

कैलाश– तो हम बाग में चले जाते हैं।

माँ– नहीं नहीं! बाग में कोई नहीं जाएगा। चुपचाप यहाँ बैठकर खेलो। यदि किसी ने शोर मचाया तो मैं उसे छड़ी से पीटूँगी।

तनु– और जो बिलकुल नहीं बोलेगा उसको?

माँ– उसको पुरस्कार स्वरूप पैसे दूँगी।

सभी बच्चे– बहुत अच्छा।

(सब बच्चे चुप रहते हैं। अंजु तनु को छू कर और फिर अपनी नाक छू कर बताती है कि यह नकसूड़ी है और फिर बच्चों की हँसी फूट पड़ती है। तनु कैलाश के गिरने का अभिनय करती है। और बच्चे फिर हँसते हैं। माँ भी हँस पड़ती है।)

माँ– अरे मुँह से कुछ बोलो क्या हुआ?

(सब बच्चे होठों पर अँगुली रखकर यह स्पष्ट

करते हैं कि आपने ही बोलने के लिए मना किया है। फिर सब बच्चे हाथ बढ़ाकर पैसे माँगते हैं।)

माँ– क्या चाहिए?

तनु– आपने तो कहा था जो बच्चा नहीं बोलेगा उसे पैसे इनाम!

माँ– लेकिन तुम तो इतना शोर मचा रहे थे।

कैलाश– हम बोल तो नहीं रहे थे।

माँ– नहीं नहीं हँसना और बोलना दोनों शोर मचाने में शामिल हैं।

कैलाश– नहीं जी! हम तो पैसे लेंगे। (सभी बच्चे उछल–उछल कर गाने और नाचने लगते हैं। हम पैसे लेंगे– हम पैसे लेंगे।

माँ– नहीं! कह कर अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न करती है किन्तु बच्चे उसे घेर लेते हैं। इतने में बगल के कमरे से कैलाश आदि के पिता पुलिस का इंस्पेक्टर और निचले मकान में रहने वाले लाला दीनानाथ कमरे में प्रवेश करते हैं। बच्चे पुलिस इंस्पेक्टर को देखकर सहम जाते हैं।)

इंस्पेक्टर– तो यही हैं वे बच्चे?

पिताजी– जी हाँ! यही हैं। जब से शाला की छुट्टियाँ हुई हैं। हम इनकी धमाचौकड़ी से तंग आ गए हैं। खाना पीना नाचना गाना–यही काम है इनका। हर दम आसमान सिर पर उठाए रहते हैं।

इंस्पेक्टर– (कैलाश की ओर देखकर) क्या नाम है तुम्हारा?

कैलाश– मेरा नाम कैलाश और इनका नाम तनु अंजु और मंजु।

इंस्पेक्टर– अच्छा तो तुम लोग खूब शोर मचा रहे थे।

कैलाश– हम तो चुपचाप खेल रहे थे।

माँ– मैं इन्हें कई बार समझा चुकी हूँ। कि दोपहर को लोग विश्राम करते हैं। शोर मत मचाया करो। (लाला दीनानाथ की ओर देखकर) मैं इन बच्चों के शोर मचाने से बच गया। मैं तो इन्हें पुरस्कार देना चाहता हूँ।

माँ– पुरस्कार?

इंस्पेक्टर– जी! बात यह हुई कि लाला दीनानाथ और इनके घर वाले सो रहे थे। तभी तीन चोर घर में घुसे और इनकी कीमती चीजें बाँधने लगे। बच्चों ने यहाँ नाचना शुरू किया तो नीचे लाला जी की आँख खुल गई। उन्होंने दूसरे कमरे में चोर देखे तो झट पुलिस तो टेलीफोन कर दिया। अब तीनों चोर पकड़े गए हैं और लालाजी का सारा सामान बच गया है।

लाला दीनानाथ– यदि बच्चे शोर न मचाते तो चोर नहीं पकड़े जाते।

कैलाश और तनु– चोर?

मंजु और अंजु– चोर?

इंस्पेक्टर– हाँ हाँ! नीचे चलकर देखो। कितने लोग जमा हैं। सब लोग तुम्हें देखना चाहते हैं।

(चारों बच्चे ओए ओए कहते हुए बाहर की ओर भागते हैं। शेष चारों व्यक्ति भी ठहाका मारकर हँसते हैं और फिर बाहर निकल जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है)

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

सुभाषित

शबद सम्हारे बोलिए
शबद के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे
एक शब्द करे घाव।।

भावार्थ

शब्दों का प्रयोग बहुत सोच विचार–पूर्वक करना चाहिए। कोई शब्द किसी को घायल कर सकता है तो कोई शब्द औषधि की भाँति आराम देता है।

प्रसंग– हिन्द की चादर श्री. तेग बहादुर जी के तीन सौ पचासवें बलिदान दिवस पर

स्वधर्मे निधनं श्रेय:

– गोपाल माहेश्वरी

बच्चो! कभी दिल्ली जाओ तो लालकिला देखकर ही संतोष मत कर लेना कि यही है भारत का सबसे बड़ा ऐतिहासिक स्मारक, क्योंकि लाल किले की लाली से कहीं गहरी है उस रक्त की लाली जो बिखरी है उसके सामने ही थोड़ी दूर पर।

यह लाली है मुगलों की उस क्रूरता की खूनी लाली जिसे भारतीय इतिहास में धर्मरक्षा का सिरमौर बलिदान मानना किंचित भी अनुचित न होगा।

कहाँ? वहाँ तो अब बाजार है चहल–पहल है, चकाचौंध। वह लाली कहाँ बिखरी है? यही सोच रहे हो न? चाँदनी चौक कहते हैं उसे दिल्ली वाले। चाँदनी, जो सदा से लड़ती आई है गहरे काले अँधेरे से।

यह घटना भी एक बहुत काली रात की ही है जो दिनों नहीं, महिनों नहीं, बरसों–बरस गहराती रही हम भारतीयों पर। जी हाँ। मैं बात कर रहा हूँ क्रूर मुगल बादशाह औरंगजेब के कुशासनकाल की।

इस धर्मांध अत्याचारी के रूप में संभवत: क्रूरता ने ही देह धारण कर रखी थी। वह दौर जब हिंदुओं को भारी कर देना पड़ता था। वे खुलकर अपने त्योहार नहीं मना सकते थे, निर्भयता से धार्मिक पूजा पाठ अनुष्ठान नहीं कर सकते थे, क्योंकि औरंगजेब को वह कुछ भी पसंद न था जो उसके मजहब में मंजूर न हो। सनातनकाल से यह हिन्दुओं का देश ही था, उन उदार हिन्दुओं का जो अपना धर्म मानते पर अन्य धर्मों से द्वेष भी नहीं रखते थे।

संसार की सबसे उदार संस्कृति हिन्दु संस्कृति सिन्धु की भाँति सबको समा लेने की क्षमता वाली, लेकिन बाबर से औरंगजेब तक इतिहास साक्षी है, इस देश के मूल निवासियों पर बाहरी आक्रांताओं ने जो भीषण अत्याचार किए, उनकी दबा दी गई कहानियाँ जब कहीं उघड़ कर आती हैं आज भी हृदय काँप उठता है।

उन सत्य घटनाओं में से एक है यह घटना जिसकी खूनी लाली उस जगह फैली है जिस जगह आज गुरुद्वारा सीसगंज है। दिल्ली जाओ तो उस अनुपम बलिदान की भूमि पर शीश झुकाए बिना मत लौटना। इसका सच्चा इतिहास जानना चाहोगे? तो सुनो।

पहले मुगल आक्रांता बाबर के समय ही भारतीय आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत कर समाज को अपने विकारों से मुक्त करने का कार्य आरंभ कर दिया था श्री. गुरु नानक देव जी ने।

सिख पंत के प्रवर्तक श्री. गुरु नानक देव जी ने धर्मप्राण भारतीयों में चारों दिशाओं में लंबी–लंबी यात्राएँ कर अपने उपदेशों से जागृति फैलाई। लेकिन इसी परंपरा में जब यह अनुभव होने लगा कि दुष्टता का सामना निशस्त्र रहकर संभव नहीं है तो सिख पंथ

के छठे गुरु श्री. हरगोबिंद जी ने आध्यात्मिकता के साथ समकालीन परिस्थितियों में स्वधर्म और स्वसंस्कृति की रक्षा के लिए शस्त्र धारण भी आवश्यक समझा।

सज्जनों का सशस्त्र होना निर्बलों की रक्षा के लिए होता है। जबकि दुर्जनों के शस्त्र, दूसरों को पीड़ित करने के लिए उठते हैं।

क्षमा करें, मैं एक लंबा कालांतर पार कर आपको फिर उस मुगलिया दरबार में ले चलता हूँ। जहाँ अपने सगे बाप और भाइयों को भी न बख्शने वाले शाह औरंगजेब को किसी ने मशवरा दिया कि अपना मजहब फैलाना है तो पुजारियों, पंडितों और धर्मगुरुओं का मतांतरण करो। औरंगजेब ने देर न की और यह आरंभ किया भारतमाता के मणिमुकुट और सनातन धर्म व संस्कृति के बड़े गढ़, महर्षि कश्यप की भूमि कश्मीर से।

कश्मीर ही क्यों? क्योंकि यहाँ का पंडित वर्ग उस काल में सबसे विद्वान और भारतभर में सम्मानित था। एक और कारण भी था कि कश्मीर, काबुल और पेशावर के अधिक पास था। यदि विद्रोह अनियंत्रित होता तो दमनकारी विधर्मी वहाँ से तत्काल पहुँच सकते थे।

शेर अफगान खॉ को छः महिने में कश्मीरियों का मतांतरण करने के औरंगजेबी फरमान मिला तो उसकी शमशीर अंधाधुंध कश्मीरियों का खून पीने लगी।

अत्याचार असहनीय हुए तो पाँच सौ कश्मीरवासी पंडित जो संस्कृत और संस्कृति की

गुरुद्वारा सीसगंज साहिब

पाठशाला चलाते थे, छुपते-छुपाते चल पड़े पंजाब के आनंदपुर के लिए। जहाँ सिखपंथ के नवम गुरु श्री. गुरु तेग बहादुर जी धर्मरक्षा की परंपरा के प्रबल संरक्षक बने विराजमान थे।

पंडितों की पीड़ा सुनकर से गुरुजी पिघल गए। वे उपाय विचार ही रहे थे कि उनके पुत्र गोबिन्दराय ने बालसुलभ कुतूहल से पिता की चिंता का कारण पूछ लिया। देश धर्म पर घोर संकट का हाल बताते हुए श्री. गुरु तेग बहादुर जी की गंभीर वाणी से निकला- ''इस अत्याचार और अनर्थ को रोकने हेतु किसी महापुरुष का आत्मबलिदान आवश्यक है।''

बालक गोबिंदराय ने तत्काल कह दिया- ''पिताजी! आपसे बढ़कर कौन महापुरुष होगा जो अपने बलिदान से इन भयभीतों का भय दूर कर सके।''

ये वही गोबिंदराय थे जो बाद में दशमेश श्रीगुरु गोबिंदसिंह जी ने नाम से विख्यात हुए और खालसा पंथ के संस्थापक बने। जिन्होंने अपने बाद श्री.

गुरुग्रंथ साहिब को 'सब सिक्खन को हुकुम है गुरु मानियो ग्रंथ' कहकर सिख पंथ को एक नई पहचान दी। एक नई परंपरा चलाई। अपने पिता को बलिदान की प्रेरणा देने वाले श्रीगुरु गोबिंदसिंह जी ने अपने जीवनकाल में ही अपने चारों पुत्रों को देश-धर्म पर न्यौछावर कर दिया था। उन महान गुरु पुत्रों के नाम थे बाबा अजीतसिंहजी और बाबा जूझारसिंह जी जो चमकोर के युद्ध में बलिदान हुए और उनके छोटे साहिबजादे बाबा फतेहसिंह जी और बाबा जोरावरसिंह जी सरहिंद में जीवित ही दीवार में चुनवा दिए गए। तीन-तीन पीढ़ियों का ऐसा अनुपम बलिदान भारतीय इतिहास में सदैव श्रद्धा से स्मरणीय रहेगा।

श्री. गुरु तेग बहादुर जी ने औरंगजेब को संदेश भेजा- ''यदि वह उनका धर्म बदलवा सका तो ये सब पंडित भी तुम्हारा मजहब स्वीकार लेंगे।'' औरंगजेब की बाँछें खिल गईं।

श्री. गुरु तेग बहादुर जी को दिल्ली से बुलावा आ गया। कैसा अद्भुत बलिदान प्रसंग घटित होने को था। जब बलिदानी स्वयं अपने बलिदान के लिए अटल मृत्यु के मुख में जा रहा था ? श्रीगुरुजी के साथ उनके पाँच शिष्य भी दिल्ली चले। वे थे भाई मतिदास जी, भाई सतीदास जी, भाई गुरुदित्ता जी, भाई चीमा जी और भाई दयाल जी।

औरंगजेब ने सोचा था कि श्रीगुरु तेग बहादुर जी को दौलत से या बड़ा ओहदा देकर अपना मजहब आसानी से कुबूल करवा लेगा। लेकिन यह उसकी सबसे बड़ी भूल थी, श्री. गुरु तेग बहादुर जी एक उच्च कोटि के शौर्यशाली, आध्यात्मिक महापुरुष थे। उन्हें अपने निश्चय से डिगाना हिमालय को फूँक मारकर हिलाने जैसा ही असंभव था।

अपने प्रस्तावों की अस्वीकृति से झल्लाकर औरंगजेब ने श्रीगुरुजी को चारों से बंद लोहे के पिंजरे में बंदी बनाकर रखा। फिर उनकी आँखों के सामने ही अमानवीय यातनाओं का संभवत: यमदूतों को भी दहला देने वाला खेल आरंभ हुआ। अपने ऊपर भीषण प्रताड़नाओं को कदाचित् कोई धीर-वीर सह भी ले पर अपनों को दी जा रहीं यातनाएँ अच्छे-अच्छे को तोड़ देती हैं। औरंगजेब की यही सोच थी।

उसके बेरहम फरमान से पहले भाई मतिदास जी को चाँदनी चौक में कोतवाली के सामने, एक तख्ते से बाँधकर सरेआम आरे से चीरा गया। मानो वे कोई जीवित व्यक्ति नहीं निर्जीव लकड़ी का लट्ठा हों। लेकिन कैसा आश्चर्य था शरीर पर जरा-सी खरोंच से आदमी चीत्कार उठता है और भाई मतिदास के मुँह से उफ् तक नहीं निकली। फिर भाई दयाल जी को जीवित ही उबलते तेल के कड़ाह में डाल दिया गया। एक बूँद गर्म तेल शरीर पर पड़ जाए तो कितनी पीड़ा होती है ? कल्पना करना भी कठिन है भाई दयाल जी ने शांति से यह यातना कैसे सही होगी। भाई सतीदास के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके बिखरा दिए। तीनों के सिर काटकर सार्वजनिक रूप से भयभीत करने के लिए कोतवाली के सामने टाँग दिए।

श्रीगुरुजी देहाभास के परे आत्मा की अनश्वरता में विश्वास रखने वाले सिद्ध महापुरुष थे। वे चाहते तो अपनी अध्यात्म साधना के बल कोई चमत्कार भी दिखा सकते थे लेकिन सच्चे महापुरुष आत्मरक्षा हेतु चमत्कार नहीं दिखाते।

अंतत: पिंजरे का फाटक खुला। औरंगजेब के आदेश से जलालुद्दीन, नंगी तलवार लिए श्रीगुरुजी के वध को तैयार खड़ा था। आसपास अपार भीड़ लगी थी। श्री गुरुजी निर्भय सिंह की भाँति वधस्थल की ओर बढ़े,अत्यंत शांत, अविचल। वध स्थल पर श्री जपुजी का पाठ किया और जल्लाद की तलवार के एक ही भरपूर वार से उनका शीश धड़ से अलग कर दिया।

यह बलिदान देखकर हजारों की भीड़ तो रो ही रही थी प्रकृति भी मानो तड़प उठी थी। अचानक तेज आँधी के साथ वर्षा होने लगी। अँधेरा छा गया। मानो

सूर्यदेवता भी मुँह ढाँके शोक कर रहे थे।

अब भाई जैता जी श्री. गुरुजी की पवित्र देह को आततायी विधर्मियों के हाथों का स्पर्श नहीं होने देना चाहते थे। तय हुआ लक्खीशाह श्रीगुरुजी का शीश ले जाए। लेकिन आततायियों की आँखों में धूल कैसे पड़े? एक अकल्पनीय प्रस्ताव आया भाई जैता जी कि पिताजी का– ''तुम मेरा शीश काटकर गुरुजी के शीश के स्थान पर रख दो और श्रीगुरुजी का शीश ले जाओ।'' 'शीश दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान' की उक्ति उनके आचरण में बसी हुई थी।

गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब

आँधी तूफान का ईश्वरीय सहयोग पाकर श्रीगुरुजी का शीश आनंदपुर पहुँचा दिया गया। जहाँ बालक गोबिंदराय ने अन्य सिखों के साथ उस शीश का गंगाजल से स्नानकर चंदन की चिता में अंतिम संस्कार कर दिया गया।

इधर धड़ को अपनी सरकारी रसद की गाड़ी में छुपाकर लक्खीशाह के आठ बेटे रायसीना ले आए। चिता सजाकर अग्नि प्रज्वलित कर दी। चिता के साथ उनका घर भी स्वाहा हो गया। किसी विधर्मी को शंका भी नहीं हुई कि श्री. गुरु तेग बहादुर जी की देह का यहाँ अंतिम संस्कार हो गया है। वह परम पवित्र स्थान आज भी दिल्ली में गुरुद्वारा रकाबगंज के नाम से पावन तीर्थ बना हुआ है।

बच्चो! चाँदनी चौक के गुरुद्वारा साहिब शीशगंज में मत्था टेककर हो सके तो गुरुद्वारा साहिब रकाबगंज भी अवश्य जाना।

देश धर्म पर बलिदान होने के एक से बढ़कर एक, अनेक प्रसंगों से भरा है भारतीय इतिहास, लेकिन यह बलिदान उन सब बलिदानों में सबसे विलक्षण है, अतुलनीय है।

अँग्रेजी वर्ष १६७५ के नवम्बर मास में हुए उस अद्भुत, अतुल्य बलिदान की इस वर्ष भारतीय काल गणना के अनुसार मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि तदनुसार २४ नवम्बर २०२५ को तीन सौ पचास वीं वर्ष ग्रंथि हैं। श्री गुरु तेगबहादुर जी को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए आने वाले हजारों वर्ष तक कृतज्ञ भारतीयों की असंख्य पीढ़ियाँ इसे भूल नहीं पाएँगीं और भूलना भी नहीं चाहिए क्योंकि जो लोग अपने वास्तविक इतिहास को, विशेषकर बलिदान पर्वों को भुला देते हैं वे कभी भी अपने स्वाभिमान और गौरव को सुरक्षित नहीं रख सकते।

– इन्दौर (म. प्र.)

निश्चय

– विमला रस्तोगी

प्रतीक अमन के लिए चिड़िया पकड़ने वाला जालदार फंदा विदेश से लाया था, अमन ने माँ को यह जाल दिखाते हुए खुशी से कहा था– ''माँ! देखो यह प्रतीक ने मुझे दिया है, अब मैं इससे...।''

''यह अच्छा खिलौना नहीं है अमन।'' माँ ने नाराजगी दिखाते हुए कहा।

''क्यों माँ?''

''क्योंकि तुम इससे चिड़िया पकड़ोगे फिर उसे परेशान करोगे।''

''माँ! मैं चिड़िया को पकड़कर पिजड़े में रखूँगा वह मुझे गाना सुनाएगी, मैं उसे दाना खिलाऊँगा।''

दोपहर का भोजन करने के बाद अमन बगीचे में गया, वह एक नन्हीं चिड़िया जाल में फँसाकर माँ के पास ले गया– ''देखो माँ! मैंने चिड़िया पकड़ी है।

इसका हरा रंग कितना सुंदर हैं।'' ''अरे! यह तो 'हारिल' है यह गाना भी गाती है। अमर तुम इसे छोड़ दो।'' ''माँ! मैं इसे परेशान नहीं करूँगा, इसे दाना, पानी दूँगा।'' अमन के हठ के आगे माँ चुप रही। अमन ने पिंजरा पहले से ही साफ करके रख लिया था, उसने चिड़िया को पिंजरे में बिठाया, दाना–पानी रखा और पिंजरा बंद कर दिया। दूसरे दिन भी उसने पानी बदला, दाना रखा पिंजरे की सफाई की, इस तरह तीन चार दिन अमन ने चिड़िया का खूब ध्यान रखा, उसके बाद वह चिड़िया को भूल गया। शाला से आने के बाद वह मित्रों के साथ खेलने चला जाता। पिंजरा रसोई घर के सामने वाले बरांडे में रखा था, अत: माँ को चिड़िया को ध्यान रहता। वही चिड़िया को दाना पानी रख देती। दो–तीन दिन बीत गए अमन ने चिड़िया के बारे में बिल्कुल भूल गए हो। भलाई इसी में है कि चिड़िया को उड़ा दो।''

''नहीं नहीं माँ! ऐसा न करना। मैं चिड़िया की देखभाल अच्छी तरह से करूँगा। प्रतिदिन याद करके दाना, पानी रखूँगा, पिंजरा साफ करूँगा।'' कहकर अमन पिंजरे के पास गया, सफाई करने के लिए पिंजरे में हाथ डाला तो चिड़िया डर गई, पंख फड़फड़ाने लगी। अमन ने धीरे–धीरे पिंजरा साफ किया, कटोरी मांजने और पानी लाने के लिए रसोई घर में गया। चिड़िया ने पिंजरे का दरवाजा खुला पाया फुर्र से उड़ी वरांडे से कमरे में आई, खिड़की से बाहर निकलने का प्रयास किया, खिड़की में लगे शीशे देख नहीं पाई और टकराकर फर्श पर गिर पड़ी। अमन दौड़कर वहाँ पहुँचा, उसने देखा हारिल, बेहोश है वह जोर–जोर से साँस ले रही थी। अमन का दिल धकधक करने लगा कहीं चिड़िया मर गई तो बड़ा बुरा होगा, माँ बहुत डाँटेगी।'' अमन मन ही मन दुखी होने लगा, उसे अपनी जिद पर गुस्सा आ रहा था।

''अब बैठे क्या सोच रहे हो अमन? चिड़िया के मुँह पर पानी से हल्के-हल्के छींटें दो।'' उधर से माँ की आवाज आई। अमन ने पानी लाकर हल्के हाथ से चिड़िया के मुँह पर छींटें दिए।

''देखा अपनी जिद का परिणाम।'' माँ ने पुन: कहा। अमन चुप रहा, चिड़िया अब भी जोर-जोर से साँस ले रही थी। अमन वहीं बैठा रहा, रात होने लगी, उसने चिड़िया को उठाकर धीरे से पिंजरे में रख दिया। मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि चिड़िया ठीक हो जाए। उस रात अमन को ठीक से नींद न आई जब भी आँख खुलती वह चिड़िया को देख लेता। रात बीती सवेरा हुआ, बगीचे में चिड़िया चहचहाई, अमन की आँख खुल गई, वह झटपट उठा और पिंजरे के पास बैठ गया। गौर से चिड़िया को देखा- ''माँ जल्दी उठो, देखो।'' उसे जोर से आवाज लगाई। माँ हड़बड़ाकर उठीं- ''क्या बात है आज तू इतनी सवेरे कैसे जाग गया?'' माँ ने पूछा। अमन ने माँ की बात का उत्तर न देते हुए अपनी ही धुन में कहा- ''माँ लगता है हमारी हारिल चिड़िया ठीक हो रही है। देखो न।''

माँ ने देखा- ''चिड़िया छाती के बल औंधी नहीं पड़ी थी, बैठी थी, उसकी आँखें भी खुली थीं साँस भी ठीक चल रही थी।'' ''शुक्र है भगवान का चिड़िया की जान बच गई।'' माँ ने ईश्वर को धन्यवाद देते हुए कहा- ''अमन इसके पिंजरे में दाना पानी रख दो इच्छा होने पर खा सकती है।'' माँ के कहने पर अमन ने वैसा ही किया। वह हारिल के दाना खाने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने मन ही मन निश्चय किया कि हारिल ठीक होते ही उसे आजाद कर देगा फिर कभी चिड़िया नहीं पकड़ेगा। हारिल के ठीक हो गई अमन ने पिंजरा खोलकर उसे उड़ा दिया, वह पेड़ पर बैठ अन्य साथियों के संग चहकने लगी अमन भी खुशी में ताली बजाने लगा।

- दिल्ली

कविता-श्री. गुरुनानक जयंती कार्तिक पूर्णिमा

धन्य धन्य श्री. नानक देव

ननकाना साहिब में जन्मे
जो अखंड भारत का भाग
कार्तिक माह की शुभ पूनम वह
नानक जी जन्मे धनभाग

सिक्ख पंथ प्रारंभ किया था
रूढ़िवाद पर किया प्रहार
जाति पाँति के भेद भाव से
भारतजन का कर उद्धार

किया प्रवास धर्म हित जिनने
भारत की सीमा कर पार
एक अनादि ओंकार सत्य है
यह सिखलाया सबको सार

ऐसी दिव्य महान विभूति को
नमन करें सब बारम्बार
इस पवित्र प्रकाश पर्व पर
हो बधाइयाँ लख-लख बार

जाहि विधि राखे राम

– डॉ. मनोहर भण्डारी

जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए– लंदन के मनोवैज्ञानिकों ने **डॉ. रिचार्ड बाइज मैन** के नेतृत्व में ४०० लोगों पर किए शोध में पाया कि सभी परिस्थितियों में प्रसन्न और संतुष्ट रहने वाले लोग अवसर पैदा करने और उसका पूरी क्षमता से दोहन करने में सक्षम होते हैं। वे अवसर को पहचानने में चूक नहीं करते हैं। ऐसे लोग सदैव ही अपनी मानसिक शक्तियों के विकास के लिए प्रयास करते रहते हैं। ध्यान और एकाग्रता बढ़ाने के तरीकों का उपयोग कर ऐसे लोग अपने मन को हमेशा स्वच्छ और स्वस्थ रखते हैं।

सर्वभूत हिते रता: या परहित सरिस धर्म नहीं भाई– जो लोग दूसरों का भला करते रहते हैं, वे स्वस्थ रहते हैं। 'हाउ योर माइंड केन हील योर बॉडी तथा द फाइव साइड इफेक्ट्स ऑफ काइंडनेस' के लेखक **डॉ. डेविड आर हेमिल्टन** के अनुसार परोपकारियों और दयालु लोगों के रक्त में ऑक्सीटोसिन नामक हृदय रक्षक हारमोन निकलता है, जिसके कारण नाइट्रिक ऑक्साइड रसायन स्रवित होता है, जो रक्त नलिकाओं को चौड़ा कर देता है, जिसके कारण उच्च रक्तचाप तथा हृदयरोग की सम्भावना कम हो जाती है। केस वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन के **स्टेफन पोस्ट** के अनुसार परोपकार करने से तो लाभ होते ही हैं, अपितु यदि मन में उदारता की भावना भी स्वास्थ्यकारी और कल्याणकारी होती है। श्रीरामचरितमानस में भी मानस पुण्य को लाभकारी बताया गया है।

रिफाइंड तेल, आरो पानी, माइक्रोवेव ओवन स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हैं। इनका उपयोग कदापि न करें। फास्टफूड, जंकफूड, कोल्डड्रिंक से भी बचें।

यदि बीमार हैं तो– यह कल्पना करें कि आप माता–पिता और भगवान की कृपा से पूर्णतया स्वस्थ

हो रहे हैं। प्रतिदिन इस विचार को रात को सोते समय बार-बार बोलकर दोहराएँ कि मैं पूर्णतया स्वस्थ हो रहा हूँ, मैं बीमार नहीं हूँ। अपने आपसे सकारात्मक बातचीत करें, उस बातचीत में स्वस्थ होने की प्रधानता हो। कल्पना करें कि आपके रक्त की सफेद रक्त कणिकाएँ (व्हाईट ब्लड सेल्स) सफेद रंग के घोड़े पर सवार सैनिक हैं और हाथ में तलवार लेकर आपके रोग को काट रही हैं या परास्त कर रही हैं। रोग चाहे जितना घातक हो, आपकी कल्पना उससे भी अधिक सशक्त होना चाहिए। भगवान और अपने अवचेतन मन की अपार शक्तियों पर पूरा विश्वास कीजिए। इसे आधुनिक विज्ञानी न्यूरोप्लास्टीसिटी और हमारे शास्त्रों में **यत् भावो तत् भवति** या संकल्प कहते हैं। स्वयं को आश्वस्त करें कि भगवान की कृपा से आप पूर्ण स्वस्थ हो जाएँगे। अथर्ववेद में इसे **आश्वासन चिकित्सा** तथा अमेरिका में **एम्युरेंस थेरेपी** कहा जाता है। एलैने मारी ने अपने पुस्तक **द माइंड बॉडी कनेक्शन:ए बिगिनर्स गाइड टू हीलिंग द बॉडी विथ द पॉवर ऑफ द माइंड** में रोगोपचार में सकारात्मक विचारों की महती भूमिका का उल्लेख किया है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के **डॉ. डेविड स्पीगल** के अनुसार माइंडफुलनेस थेरेपी में भाग लेने वाली स्तन कैंसर की महिलाओं में तुलनात्मक रूप से दर्द कम हुआ था, जीवनस्तर बेहतर हुआ था। ब्लैक फारेस्ट विश्वविद्यालय, अमेरिका के एक शोध के अनुसार दर्द के प्रति सकारात्मक सोच मार्फीन के इंजेक्शन की तरह दर्द का नाश करता है।

रोग को सहजता से लें : रोग होने पर हताश, निराश या अवसाद ग्रस्त होने से प्रयास पूर्वक बचें। धैर्य के साथ अपने आहार-विहार, आचरण आदि को सुधारें। जो भी हो रहा है, ईश्वर की इच्छा से हो रहा है, यह भाव आप में अनुपम सहनशक्ति का संचार कर सकता है। भगवान श्रीराम, सीताराम, श्रीकृष्ण, महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, आदि सभी को जीवन में घनघोर विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है, हम तो साधारण व्यक्ति हैं।

- इन्दौर
(म. प्र.)

भूल-भुलैया
ठ से ठग

-चाँद मोहम्मद घोसी

धनीराम सुनार की दुकान से गब्बर सिंह नामक ठग सोने के आभूषण के बदले नकली रुपए देकर फरार हो गया है। धनीराम को सही रास्ते से गब्बर के पास पहुँचा दीजिए ताकि वह ठग को पुलिस थाने ले जा सके।

- मेड़ता सिटी (राजस्थान)

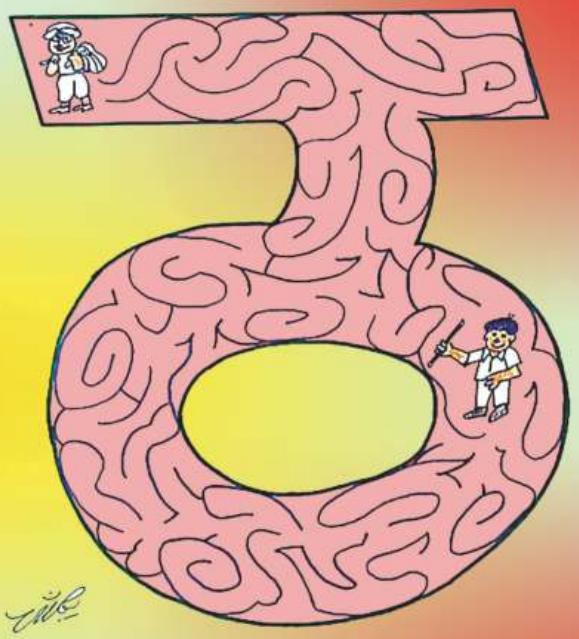

लाचित बोरफुकन

– तारा दत्त जोशी

लाचित बोरफुकन आहोम साम्राज्य के राजा चक्रध्वज की शाही घुड़सवार सेना के अध्यक्ष थे। अपनी बहादुरी, कुशल सैन्य संचालन और नेतृत्व क्षमता के कारण उन्हें जल्दी ही अहोम सेना का सेनापति पद का दायित्व प्राप्त कर लिया।

'बोरफुकन' उनका नाम नहीं बल्कि उन्हें मिली हुई 'पदवी' थी। उनका नाम तो 'चाउ लाचित फूकनलुंग' था। बोरफुकन से पहले वे घोड़ा बरुआ (घुड़सवार सेना प्रमुख), दलिया बरुआ, सिमलगिरियाफूकन (कर वसूली का प्रमुख) और डोलाकाशारिन (पुलिस प्रमुख) जैसे महत्वपूर्ण पदों पर काम कर चुके थे।

बोरफुकन की सेना संख्या में बहुत छोटी थी किन्तु बहुत ही अनुशासित, साहसी और व्यवस्थित थी। अहोम सेना के १० सैनिकों की टुकड़ी डेका, २० सैनिकों की टुकड़ी बोरा, १०० सैनिकों की टुकड़ी सैकिया और १००० सैनिकों की टुकड़ी को हजारिका कहा जाता था। ३००० हजार सैनिकों का जत्था 'राजखोआ' कहलाता था। बोरफुकन दो 'राजखोआ' अर्थात् ६००० सैनिकों का संचालन करते थे।

'बोरफुकन' बनने के बाद 'लाचित' के सामने सबसे बड़ी चुनौती विखण्डित अहोम सेना को संगठित कर विशाल मुगल सेना टक्कर लेने लायक बनाना था। लाचित ने सबसे पहले सेना के लिए हथियार, नौ प्रबंधन और तोपों की व्यवस्था का दायित्व अपने हाथ में ले लिया और यह काम इतनी सावधानी से किया गया कि मुगल सेना को इसकी भनक तक नहीं लगी। लाचित ने सुगठित जल सेना और विश्वसनीय जासूसों का एक दस्ता तैयार कर अहोम सेना में जान फूँक दी।

सेना को संगठित करने के बाद लाचित ने सबसे पहले बड़ी ही कूटनीति से गुवाहाटी के ईटाकुली के किले को मुगलों से मुक्त कराने की योजना बनाई। इसके लिए बोरफुकन ने अपने विश्वसनीय जासूसों को रात में भेजकर ईटाकुली के किले में रखी मुगलों की तोपों में पानी डलवा दिया और दूसरे ही दिन किले में आक्रमण कर उसे जीत लिया। यह किला सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था। जल्दी ही लाचित ने आसपास के किलों को भी मुगलों से मुक्त करा लिया और असम में फिर से अहोम ध्वज लहराने लगा।

औरंगजेब को यह सूचना मिली तो वह आग बबूला हो गया और उसने राजा राम सिंह के नेतृत्व में ७० हजार सैनिकों की एक विशाल सेना असम को

पुन: मुगल साम्राज्य में मिलाने के लिए भेजी।

इधर बोरफुकन ने भी पहले से ही मुगल सेना से टक्कर लेने का बंदोबस्त कर लिया था। लाचित शिवाजी की गुरिल्ला युद्ध तकनीकी से परिचित थे और प्रशंशक भी थे। सराईघाट के युद्ध में लाचित ने इसी छापामार युद्ध तकनीकी का प्रयोग किया।

जब मुगल सेना ने आक्रमण किया तो बोरफुकन के नेतृत्व में अहोम सेना ने मुगल सेना को ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर ही रोक दिया और डटकर सामना करते हुए उसे आगे नहीं बढ़ने दिया।

जब मुगल सेनापति रामसिंह को गुप्तचरों से पता चला कि सरायधट से अहोम सेना को भेदकर असम को पुन: प्राप्त किया जा सकता है तो उसने चालीस जहाजों का नौ सैनिक बेड़ा युद्ध में उतार दिया। किन्तु बोरफुकन की नौ सेना के सामने मुगलों को घुटने टेकने पड़े। मुगल सेना पराजित हो गई और औरंगजेब का पूर्वोत्तर को मुगल साम्राज्य में मिलाने का सपना धरा का धरा ही रह गया।

लाचित बोरफुकन को कुशल सैन्य संचालन, युद्धनीति और वीरता के कारण पूर्वोत्तर का शिवाजी कहा जाता है। उनकी वीरता और साहस से प्रेरणा लेने के राष्ट्रीय रक्षा अकादमी द्वारा प्रशिक्षण के दौरान सर्वश्रेष्ठ कैडेट को लाचित मैडल से सम्मानित किया जाता है।

– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कविता

रोज सुबह आ जाती धूप,
चहूँ दिशा छा जाती धूप।
सर्दी की ठिठुरन में भैया,
राहत खूब दिलाती धूप।
चिड़िया, कोयल सभी चहकते,
फूलों को सहलाती धूप।
खूब मजे से खेलें सारे,
बच्चों को भा जाती धूप।
शाम ढले रूठी-रूठी-सी,
न जाने कहाँ जाती धूप?

– चण्डीगढ़

मोदी की गारंटी
यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी

मध्यप्रदेश का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा कदम

पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस

मध्यप्रदेश में हर जिला मुख्यालय पर चिन्हित एक शासकीय महाविद्यालय का पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नयन, इसके लिए **₹ 460 करोड़** का प्रावधान

महाविद्यालयों में सभी प्रकार के पाठ्यक्रम होंगे उपलब्ध

अब 'डीजी लॉकर' से डिग्री और मार्कशीट की उपलब्धता सुलभ

युवाओं में क्षमताओं का निर्माण कर, उन्हें कौशलवान और रोज़गार सक्षम बनाने में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस अहम भूमिका निभाएंगे।

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

R. O. No. D16105/25

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

सेवा के 60 दिन अविराम
लक्ष्य हमारा जन कल्याण

मोदी जी की हर गारंटी को पूरा कर रही मध्यप्रदेश की डबल इंजन सरकार

मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए गरीबों के कल्याण, किसानों के सम्मान, युवाओं के उत्थान और महिलाओं के स्वाभिमान के लिए पूर्ण रूप से समर्पित और कृत संकल्पित है।

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

गरीब कल्याण

- विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से 50 लाख से अधिक शासकीय योजनाओं के लाभ से वंचित लोग लाभांवित
- पीएम जन-मन योजना से जनजातीय समाज को शासकीय योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ सुनिश्चित। विशेष पिछड़ी जनजाति बहुल जिलों में रु. 7300 करोड़ से आंगनवाड़ी केन्द्र, छात्रावास, सड़कें, पुल और आवासों के निर्माण का निर्णय
- 56 लाख से अधिक हितग्राहियों को रु. 681 करोड़ की सामाजिक सुरक्षा पेंशन का अंतरण
- स्वामित्व योजना में 1.75 लाख ग्रामीण नागरिकों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भू-अधिकार पत्र वितरित

शिक्षा एवं रोज़गार

- प्रधानमंत्री जी द्वारा रु. 170 करोड़ की लागत से खरगोन में क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय की स्थापना की घोषणा
- प्रत्येक जिले में एक शासकीय महाविद्यालय का पीएम उत्कृष्टता महाविद्यालय के रूप में उन्नयन का निर्णय
- आगर-मालवा में नया विधि महाविद्यालय, सागर में रानी अवंती बाई लोधी विश्वविद्यालय तथा गुना में तात्या टोपे विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय
- मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा में 28.9% सकल नामांकन के साथ अनुपात में राष्ट्रीय औसत से आगे निकला
- रोज़गार दिवस के अंतर्गत रिकॉर्ड 7 लाख से अधिक युवाओं को रु. 5 हजार करोड़ से अधिक का स्व-रोजगार ऋण वितरित
- स्टार्ट-अप्स को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिए वित्तीय सहायता
- अग्निवीर योजना के लिये युवाओं को 360 घंटे प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया गया

महिला सशक्तिकरण

- प्रदेश की 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों को रु. 3152 करोड़ की सहायता का अंतरण
- आहार अनुदान योजना में विशेष पिछड़ी जनजाति की 1.97 लाख बहनों को रु. 59 करोड़ की सहायता
- 45 लाख से अधिक बहनों को गैस सिलेंडर रीफिलिंग के लिए रु. 118 करोड़ का अंतरण

स्वास्थ्य

- दूरस्थ क्षेत्रों के गंभीर मरीजों के लिये मुख्यमंत्री एयर एम्बुलेंस सेवा शुरू करने का निर्णय
- सागर, शहडोल, नर्मदापुरम, धार, झाबुआ, मण्डला, बालाघाट, श्योपुर और खजुराहो में नये आयुर्वेदिक महाविद्यालयों की स्थापना का निर्णय

किसान कल्याण

- श्रीअन्न को बढ़ावा देने के लिए रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में मिलेट्स उत्पादक किसानों को रु. 1000 प्रति क्विंटल का अतिरिक्त प्रोत्साहन
- शून्य ब्याज दर पर ऋण योजना को जारी रखने का निर्णय

अधोसंरचना विकास

- पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना की स्वीकृति से चंबल और मालवा के 13 जिलों के 3 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई में वृद्धि से लगभग 1.5 करोड़ आबादी को मिलेगा लाभ
- रु. 10 हजार करोड़ की लागत से 724 कि.मी. लंबी 24 सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास। व्यापार, कृषि, पर्यटन, उद्योग, तीर्थाटन को बढ़ावा
- ग्वालियर-बेंगलुरु, ग्वालियर-अहमदाबाद और ग्वालियर-दिल्ली-अयोध्या विमान सेवा प्रारंभ
- इंदौर में रु. 350 करोड़ लागत से निर्मित होने वाले एलिवेटेड कॉरिडोर से मिलेगी आमजन को सुविधा
- उज्जैन में एक नये अत्याधुनिक एयरपोर्ट की स्थापना का निर्णय
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मध्यप्रदेश के विकास को गति देने के लिए रु. 7650 करोड़ की नई परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास

आध्यात्मिक अभ्युदय

- 1450 कि.मी. लम्बे श्रीराम वन पथ गमन के निर्माण का निर्णय
- ओरछा में भव्य श्रीराम राजा लोक का होगा निर्माण
- उज्जैन में भव्य रूप से विक्रमोत्सव के आयोजन का निर्णय
- मुख्यमंत्री हेली पर्यटन योजना के माध्यम से विभिन्न पर्यटक स्थलों एवं धार्मिक स्थलों पर हेलीकॉप्टर प्रारंभ करने का निर्णय

मध्यप्रदेश शासन

R. O. No. D16105/25

दमयन्ती का स्वयंवर

– मोहनलाल जोशी

एक बार लोमश ऋषि स्वर्गलोक गए। उन्होंने अर्जुन का समाचार जाना। वहाँ से वे काम्यक बन गए। उन्होंने युधिष्ठिर से कहा– अर्जुन ने दिव्यास्त्र प्राप्त कर लिए हैं। वह शीघ्र आपके पास आ जाएगा।

युधिष्ठिर ने कहा– भूलोक में मेरे से अभागा कोई राजा नहीं है। जूए में मेरा सब कुछ नष्ट हो गया। उस समय बृहदश्व मुनि आए। उन्होंने राजा युधिष्ठिर को नल–दमयन्ती की कथा सुनाई।

दमयन्ती विदर्भ देश के राजा की पुत्री थी। वह बहुत सुन्दर थी। उसके स्वयंवर में देवता भी आए थे। परन्तु वह नल से प्रेम करती थी। दमयन्ती ने स्वयंवर में राजा नल के गले में माला डाल दी। दोनों का विवाह हो गया।

बाद में जूए के कारण दोनों को वनवास जाना पड़ा। वे दोनों अकेले थे। बृहदश्व जी ने कहा– राजन! तुम्हारे साथ तो हजारों ब्राह्मण हैं। तुम्हारे भाई भी साथ हैं। तुम मुझसे द्यूत विद्या के रहस्य समझ लो। तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। तुम्हारी विजय होगी।

नल और दमयन्ती का वनवास

एक राजा थे। उनका नाम नल था। उनकी पत्नी का नाम दमयन्ती था। वह बहुत सुन्दर थी। नल उससे बहुत प्रेम करते थे।

एक बार राजा नल ने अग्निहोत्र किया। उन्होंने पैर नहीं धोए थे। वे अशुद्ध थे। उनके पैरों से कलियुग उनके शरीर में प्रवेश कर गया।

कलियुग के प्रभाव से वह जूआ खेलने लगा। वह जूए से राजपाट हार गया। उसे अपनी पत्नी के साथ वन (जंगल) में रहना पड़ा। उसने दमयन्ती से कहा– तुम पिता के घर चली जाओ। जंगल में बहुत हिंसक पशु रहते हैं।

दमयन्ती पति के साथ ही रही। तब नल उसे रात में सोता हुए छोड़कर जंगल में दूर चला गया। दमयन्ती बहुत दिनों तक वन में अकेली भटकती रही। फिर अपने पिता के घर पहुँची।

इधर नल भी अयोध्या के राजा के पास पहुँचे। वह एक दिन दमयन्ती के देश आए। उनका फिर से मिलन हुआ कलियुग का प्रभाव समाप्त हो गया था। वे सुख से रहने लगे।

– बाड़मेर (राजस्थान)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

उन्नति और खुशहाली की ओर निरंतर बढ़ते कदम

मध्यप्रदेश सरकार के 180 दिन

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सुशासन से समृद्धि

- प्रधानमंत्री जी द्वारा साइबर तहसील परियोजना प्रदेश के सभी 55 जिलों में लागू। नामांतरण, बंटवारा आदि विभिन्न राजस्व प्रकरणों के ऑनलाइन निराकरण की पहल करने वाला मध्यप्रदेश, देश का पहला राज्य
- ध्वनि विस्तारक यंत्रों की अनियंत्रित आवाज का प्रयोग प्रतिबंधित
- खुले में मांस-मछली की बिक्री पर प्रतिबन्ध
- यातायात सुगमता के लिए भोपाल में बीआरटीएस कॉरिडोर हटाने का निर्णय
- जिलों, संभागों, तहसीलों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण के लिए पृथक प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग बनाने का निर्णय
- उज्जैन शहर के केडी गेट से इमली तिराहा मार्ग चौड़ीकरण के लिये 23 धार्मिक स्थलों को हटाने के लिये व्यवस्थापकों, पुजारियों और नागरिकों द्वारा सहयोग कर साम्प्रदायिक सौहार्द का उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत
- निजी स्कूलों द्वारा कोर्स की किताबें, यूनिफार्म एवं अन्य शिक्षण सामग्री किसी निर्धारित दुकान से खरीदने के लिए पालकों पर अनुचित दबाव डाले जाने के मामले में मुख्यमंत्री द्वारा स्कूलों के खिलाफ सख्त कार्यवाही के निर्देश
- 2000 से अधिक पुलिसकर्मियों को मिला पात्रतानुसार उच्च पद
- बालाघाट के कमकोदादर में हुई मुठभेड़ में नक्सलियों को खत्म करने वाले 24 शासकीय पुलिस सेवकों का आउट ऑफ टर्न प्रमोशन
- पुलिसकर्मियों के लिए मुख्यमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 25 हजार मकान बनाने का लक्ष्य
- मध्यप्रदेश में बाघों अपराधों में कमी, थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण का कार्य तेजी से जारी
- 105 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर डीम्ड अनुज्ञा प्राप्त करने और 300 वर्ग मीटर तक के आवासीय भू-खंडों पर त्वरित अनुज्ञा प्रदान करने की व्यवस्था लागू
- दो महीनों में राजस्व महाअभियान चलाकर 30 लाख 48 हजार से अधिक राजस्व प्रकरणों का निराकरण
- प्रदेश के सभी बोरवेलों की जानकारी रखने हेतु शासन द्वारा पोर्टल तैयार। खुले बोरवेलों को बंद करने के लिए अधिकारियों की जिम्मेदारी तय
- सभी संभागों में समीक्षा बैठकों के दौरान बड़े पैमाने पर विकास कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास
- शासकीय सेवकों के महंगाई भत्ते में 4 प्रतिशत की वृद्धि से 46% हुआ डीए

समावेशी शिक्षा से संवरता कल

- प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (पीएम उषा) के अंतर्गत 8 विश्वविद्यालयों में अधोसंरचना तथा अन्य विकास कार्यों के लिए ₹400 करोड़ स्वीकृत
- हर जिले में पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु ₹485 करोड़ के निवेश से 55 जिलों में पूर्व से संचालित एक महाविद्यालय का पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में उन्नयन। इन कॉलेजों में 1750 शैक्षणिक एवं 369 तृतीय व चतुर्थ श्रेणी के पद सृजित
- पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस को बहुसंकायी बनाने एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के संचालन हेतु 7 महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर नवीन संकाय एवं 55 महाविद्यालयों में स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत, बायोटेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर साइंस विषय प्रारंभ
- पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में सेंटर फॉर रिसर्च इन स्कीम एंड पॉलिसी (CRISP) के माध्यम से 8 रोजगारोन्मुखी स्किल-आधारित पाठ्यक्रमों का संचालन
- आईआईटी इंदौर के सहयोग से उज्जैन में निर्मित देश के प्रथम शोध-आधारित नवाचार, प्रौद्योगिकी एवं उद्यमिता अनुसंधानात्मक विचारशील केंद्र (डीप-टेक रिसर्च और डिस्कवरी सैटेलाइट कैम्पस) का उद्घाटन
- खरगोन में ₹170 करोड़ से क्रांतिसूर्य टंट्या भील विश्वविद्यालय का उद्घाटन
- 369 सर्वसुविधायुक्त सीएम राइज विद्यालयों का संचालन
- विश्वविद्यालयों के कुलपति को कुलगुरु कहे जाने का निर्णय
- सागर में रानी अवंतीबाई लोधी विश्वविद्यालय एवं गुना में तात्या टोपे विश्वविद्यालय प्रारंभ
- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के नाम से होगा सागर में आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू करने वाला देश का पहला राज्य बना मध्यप्रदेश
- अंतरराष्ट्रीय शिक्षा की गुणवत्ता से जुड़ने के लिए 12 अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ एम.ओ.यू.
- विश्वविद्यालयों में छात्र-छात्राओं की अंक सूची एवं उपाधियों को डिजी लॉकर में अपलोड करने की व्यवस्था लागू
- व्यावसायिक शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा का एकीकरण कर 25 व्यावसायिक विषयों का पाठ्यक्रम में समावेश
- इंजीनियरिंग-मेडिकल की तर्ज पर नर्सिंग स्टूडेंट की स्टेट लेवल पर परीक्षा का निर्णय, केंद्र के नर्सिंग एक्ट के अनुसार राज्य में आयोग गठित होगा। भविष्य में नर्सिंग संस्थाओं को मान्यता राष्ट्रीय आयोग देगा
- शिक्षा में गुणवत्ता के लिये भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, इंदौर, उज्जैन, रीवा के विश्वविद्यालयों में इनक्यूबेशन केंद्रों की स्थापना
- पायलट ट्रेनिंग के लिए विश्वविद्यालयों में कोर्स शुरू होगा
- एमपी बोर्ड 12वीं में 75 फीसदी अंक पाने वाले करीब 90 हजार छात्रों को लैपटॉप के लिए दी जायेगी ₹25-25 हजार की राशि
- सागर, खरगोन और गुना में नए विश्वविद्यालयों की स्थापना
- शासकीय महाविद्यालयों में कृषि को एक विषय के रूप में जोड़ा गया

स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार

- प्रदेश के दुर्गम्य क्षेत्रों से गंभीर रूप से बीमार/दुर्घटनाग्रस्त लोगों को एयरलिफ्ट कर समय पर उपचार उपलब्ध कराने के लिए सरकार की संवेदनशील पहल के तहत पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा का शुभारंभ
- कार्य दक्षता के लिए चिकित्सा शिक्षा विभाग और लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग का विलय
- आयुष्मान भारत योजना में 3 करोड़ 99 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड वितरित। अब तक 38 लाख से अधिक मरीजों का निःशुल्क उपचार
- जिला अस्पताल एवं सिविल अस्पतालों को एक-एक शव-वाहन उपलब्ध कराने का निर्णय
- सागर, शहडोल, नर्मदापुरम, धार, झाबुआ, मंडला, बालाघाट, श्योपुर एवं खजुराहो में नए आयुर्वेदिक महाविद्यालय स्थापित करने का निर्णय
- सिंहस्थ को देखते हुए उज्जैन में नवीन शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना का निर्णय
- चिकित्सा महाविद्यालयों को पीपीपी मोड पर स्थापित करने का निर्णय। मेडिकल कॉलेजों के साथ नए नर्सिंग कॉलेजों की स्थापना के लिए राशि स्वीकृत
- स्वास्थ्य संस्थानों में 46 हजार 491 नये पदों (नियमित/संविदा/आउटसोर्स) के सृजन की स्वीकृति
- स्वास्थ्य सुविधाओं में बेहतर प्रदर्शन के लिये स्वास्थ्य संस्थानों में चिकित्सीय विशेषज्ञों के 607 पदों पर पूर्ति सीधी भर्ती से कराने की मंजूरी

सशक्त बनती नारी शक्ति

- लाड़ली बहना योजना के अंतर्गत 1 करोड़ 29 लाख बहनों के खातों में जनवरी से अभी तक ₹9 हजार 455 करोड़ से अधिक की सहायता राशि का अंतरण
- लाड़ली लक्ष्मी योजना अंतर्गत दिसंबर 2023 से अभी तक 73 हजार 880 लाड़ली बालिकाओं के खाते में ₹34 करोड़ की छात्रवृत्ति का अंतरण
- 45 लाख 89 हजार बहनों के खातों में ₹450 में गैस सिलेंडर की रीफिलिंग के लिए ₹118 करोड़ का अंतरण
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना अंतर्गत 3 वर्षों में अब तक 88 लाख से अधिक निःशुल्क गैस कनेक्शन दिये
- महिला स्व-सहायता समूहों को दी गयी ₹9 हजार 560 करोड़ से अधिक की सहायता

युवा कल्याण के सतत् प्रयास

- सरकारी नौकरियों के लिए चयनित 11 हजार से अधिक उम्मीदवारों को सौंपे गए नियुक्ति-पत्र
- स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहित करने के लिए नई पहल के तहत, प्रदेश के स्टार्ट-अप्स को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों में सहभागिता के लिए ₹50 हजार से लेकर डेढ़ लाख तक वित्तीय सहायता का प्रावधान
- राज्य स्तरीय रोजगार दिवस के अवसर पर रिकॉर्ड 7 लाख युवाओं को ₹5 हजार करोड़ का स्व-रोजगार ऋण वितरित
- अग्निवीर योजना में युवाओं का अधिक से अधिक चयन हो, इस उद्देश्य से 360 घंटे प्रशिक्षण देने का लक्ष्य
- मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना में फरवरी 2024 में 8 हजार प्रशिक्षणार्थियों को ₹6 करोड़ 60 लाख का स्टाइपेंड वितरित

"हमारा उद्देश्य है कि सरकार उपलब्ध संसाधनों के साथ जनहितैषी गतिविधियों को प्रभावी तरीके से क्रियान्वित करे। प्रदेश को विकास के पथ पर निरंतर आगे ले जाना और सुशासन को सच्चे स्वरूप में धरातल पर उतारना ही हमारा लक्ष्य है"

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

R. O. No. D16105/25

अन्नदाता के जीवन में आयी खुशहाली

- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि एवं मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना अंतर्गत 80 लाख से अधिक किसानों को प्रतिवर्ष ₹12 हजार की सहायता
- फसल बीमा योजना खरीफ–23 के अंतर्गत 25 लाख से ज्यादा किसानों को ₹750 करोड़ से अधिक की राशि के दावों का भुगतान
- श्रीअन्न (मिलेट्स) उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में प्रति क्विंटल ₹1000 का विशेष प्रोत्साहन
- रबी विपणन वर्ष 2024-25 में 6 लाख से अधिक किसानों से 48 लाख 35 हजार मीट्रिक टन से अधिक गेहूं का समर्थन मूल्य पर नकद भुगतान कर उपार्जन। प्रति क्विंटल ₹125 बोनस का भुगतान
- किसानों के लिए शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर अल्पावधि फसल ऋण योजना लागू रखने का निर्णय
- मुख्यमंत्री सोलर पंप योजना अब प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना के नाम से लागू
- सात जिलों (उमरिया, अलीराजपुर, बैतूल, मंडला, खंडवा, सीधी एवं सीहोर) में 71 हजार 345 हेक्टेयर वन क्षेत्र से लघु वनोपज के निर्यात के लिए मिला वैधिक प्रमाण-पत्र

गरीब वर्ग को मिला सम्मानजनक जीवन

- इंदौर की हुकुमचंद मिल के 4 हजार 800 श्रमिक परिवारों को ₹224 करोड़ की राशि का भुगतान
- स्वामित्व योजना में 23 लाख 50 हजार लोगों को स्वामित्व अधिकार पत्र वितरित
- श्रमिकों को ई-स्कूटर खरीदने के लिए ₹40 हजार की आर्थिक सहायता का निर्णय
- 'मुख्यमंत्री जनकल्याण (संबल) योजना 2.0' के अंतर्गत 30 हजार से अधिक श्रमिक परिवारों को ₹670 करोड़ से अधिक की अनुग्रह सहायता राशि का अंतरण
- दिव्यांगता और मृत्यु के आधार पर मिलने वाली सहायता राशि को बढ़ाकर ₹4 लाख किया
- विभिन्न श्रेणी के ऊर्जा उपभोक्ताओं के लिये 24 हजार 420 करोड़ रुपये की सब्सिडी का निर्णय

कमजोर वर्ग के साथ प्रदेश सरकार

- सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के माध्यम से प्रतिमाह 55 लाख 60 हजार से अधिक हितग्राहियों को पिछले एक वर्ष में लगभग ₹4 हजार करोड़ से अधिक पेंशन राशि का अंतरण
- तेंदूपत्ता संग्राहकों का मानदेय ₹3000 प्रति बोरा से बढ़ाकर ₹4000 प्रति बोरा किया। लगभग 35 लाख तेंदूपत्ता संग्राहक लाभान्वित
- पीएम जन-मन योजना अंतर्गत विशेष पिछड़ी जनजाति बहुल जिलों में ₹7300 करोड़ से अधिक की लागत से हो रहे अधोसंरचना के कार्य। कुल 11 लाख से अधिक भाई-बहन लाभान्वित होंगे। साथ ही बैगा, भारिया और सहरिया परिवारों के अविद्युतीकृत घरों तक बिजली पहुंचाने की कार्ययोजना स्वीकृत
- आहार अनुदान योजना अंतर्गत विशेष पिछड़ी जनजातियों की बहनों के खातों में जनवरी से अभी तक ₹148 करोड़ से अधिक की राशि अंतरित

आर्थिक समृद्धि की ओर बढ़ता मध्यप्रदेश

- मध्यप्रदेश के चौतरफा और तेज गति से विकास के लक्ष्य को लेकर चल रही मध्यप्रदेश सरकार की पहली प्राथमिकता अंत्योदय और विकसित मध्यप्रदेश के संकल्प को पूरा करना है। इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए ₹ 1 लाख 45 हजार करोड़ से अधिक का लेखानुदान प्रस्तुत
- पिछले 6 माह में जीएसटी अंतर्गत कुल ₹19091 करोड़ का राजस्व प्राप्त, जो पिछले वर्ष से 28% अधिक है। अप्रैल की जीएसटी राजस्व वृद्धि दर में मध्यप्रदेश देश में प्रथम स्थान पर
- राजस्व वृद्धि के विशेष प्रयासों से ₹4150 करोड़ का अतिरिक्त राजस्व रिकवरी प्रवर्तन, ITC रिवर्सल आदि के माध्यम से प्राप्त हुआ

औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन

- बकतरा (सीहोर) में लगभग ₹60,000 करोड़ के निवेश से पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स तथा इथेन क्रेकर परियोजना की स्थापना का प्रस्ताव
- 1 एवं 2 मार्च, 2024 को उज्जैन में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव ऐतिहासिक रूप से सफल रही
- कॉन्क्लेव में 283 इकाइयों को 508 हेक्टेयर भूमि के आवंटन-पत्र प्रदान किये। इन इकाइयों द्वारा ₹ 12 हजार 170 करोड़ से अधिक का निवेश से 20 हजार से अधिक लोगों को रोजगार
- ₹10 हजार करोड़ लागत की 60 से अधिक उद्योग इकाइयों का शुभारंभ हुआ, जिनसे 17 हजार से अधिक रोजगार सृजित होने की सम्भावना है
- ₹1 लाख करोड़ से अधिक के व्यवसाय और उद्योग निवेश प्रस्ताव मिले
- कॉन्क्लेव में कुल 12 देशों और 650 से अधिक औद्योगिक निवेशकों की भागीदारी हुई, 2100 से अधिक बिजनेस-टू-बिजनेस बैठकें, 4000 से अधिक डेलिगेट्स ने लिया भाग
- उज्जयिनी विक्रम व्यापार मेला एवं ग्वालियर व्यापार मेला-2024 में वाहनों के मालिकों पंजीयन पर 50% की छूट पर उज्जैन में हुई 23,000 वाहनों की रिकॉर्ड बिक्री
- व्यापार मेले में हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों के क्रय-विक्रय के जरिए लोकल को बनाया गया वोकल। ₹2300 करोड़ का हुआ कारोबार

तेज गति से अधोसंरचना विकास

- पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना के लिए मध्यप्रदेश, राजस्थान और केंद्र सरकार के बीच समझौता। 10 जिलों को मिलेगा लाभ
- केन-बेतवा लिंक परियोजना के लिये ₹24 हजार 290 करोड़ से अधिक की राशि स्वीकृत। परियोजना के दौधन बांध के निर्माण हेतु ₹5,137 करोड़ लागत की निविदा स्वीकृति के अंतिम चरणों में। प्रेशराइज्ड पाइप प्रणाली के निर्माण हेतु ₹12 हजार 210 करोड़ लागत की निविदाएं आमंत्रित
- ₹308 करोड़ की लागत से आगर जिले में जलूद ऊर्जा संयंत्र का भूमिपूजन
- ग्वालियर-बेंगलुरु, ग्वालियर-अहमदाबाद और ग्वालियर-दिल्ली-अयोध्या विमान सेवा का शुभारंभ
- इंदौर उज्जैन सिक्स लेन परियोजना को स्वीकृति
- इंदौर में ₹350 करोड़ से एलिवेटेड कॉरिडोर का भूमिपूजन। भोपाल, देवास, ग्वालियर, जबलपुर एवं सतना में भी बन रहे हैं एलिवेटेड कॉरिडोर
- ₹10 हजार करोड़ से अधिक की लागत से 724 किमी लम्बी 24 सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास
- माननीय प्रधानमंत्री जी के कर-कमलों से ₹24 हजार 500 करोड़ की अधोसंरचना परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास
- प्रधानमंत्री जी द्वारा अमृत भारत स्टेशन योजनांतर्गत मध्यप्रदेश के 33 स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य का शिलान्यास एवं 133 रेल ओवर ब्रिज एवं अंडरपास का शिलान्यास और लोकार्पण
- प्रदेश को 364 रेल परियोजनाओं की सौगात। प्रदेश की चौथी सेमी-हाई स्पीड वंदे भारत एक्सप्रेस खजुराहो से हजरत निजामुद्दीन ट्रेन मिली
- भोपाल में वंदे भारत ट्रेनों के रख-रखाव और सुविधाओं के लिए लगभग ₹100 करोड़ की लागत से नए कोच कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास
- सिंगरौली-संत हिरदाराम नगर रेल खण्ड का लोकार्पण
- राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के निर्माण और सुदृढ़ीकरण के लिए ₹3 हजार 500 करोड़ की राशि स्वीकृत
- जबलपुर में ₹485 करोड़ से अधिक की लागत से मध्यप्रदेश राज्य न्यायिक अकादमी को स्वीकृति
- उज्जैन-जावरा के मध्य 4-लेन ग्रीनफील्ड एक्सेस कंट्रोल्ड हाई-वे निर्माण के लिये ₹5 हजार 17 करोड़ से अधिक की स्वीकृति। इस मार्ग के निर्माण से उज्जैन, इंदौर एवं आस-पास के क्षेत्र मुम्बई-दिल्ली 8 लेन इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (एक्सप्रेस-वे) से जुड़ेंगे
- ₹1540 करोड़ की लागत से बनने वाले भोपाल मेट्रो के नए 8 स्टेशनों का भूमिपूजन, नगरीय निकायों को विकास कार्यों के लिए ₹1 हजार करोड़ की राशि का अंतरण
- मुख्यमंत्री शहरी क्षेत्र अधोसंरचना (चतुर्थ चरण) निर्माण योजना के लिए ₹1630 करोड़ से अधिक राशि स्वीकृत
- भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन एवं सागर में प्रधानमंत्री ई-बस सेवा योजना में 550 से अधिक शहरी ई-बसों के संचालन का निर्णय
- कायाकल्प अभियान के अंतर्गत ₹2500 करोड़ के निवेश से बदल रही है शहरों में सड़कों की सूरत
- प्रदेश के सभी प्रमुख शहरों में PNG पाइपलाइन से गैस कनेक्शन व्यवस्था करने का निर्णय
- देश में सबसे कम समय में बनकर तैयार हुये मध्यप्रदेश के सबसे बड़े राजमाता विजयाराजे सिंधिया एयरपोर्ट (ग्वालियर) का उद्घाटन

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अभ्युदय

- पर्यटकों को हवाई यात्रा की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए 'पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा' एवं 'पीएमश्री धार्मिक पर्यटन हेली सेवा' का शुभारंभ
- नदी, तालाबों, कुओं, बावड़ियों एवं अन्य जल स्रोतों के संरक्षण एवं इनके पुनर्जीवन के लिये 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस से 16 जून गंगा दशहरा तक जल-गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है
- विक्रम सांस्कृतिक पर्व का 1 मार्च से 9 अप्रैल, 2024 तक किया गया आयोजन। इस दौरान कालजयी महानायकों की तेजस्विता पर केन्द्रित भारत के अपने किस्म के पहले संग्रहालय 'वीर भारत न्यास' का शिलान्यास एवं उज्जयिनी गौरव दिवस का आयोजन
- 29 फरवरी, 2024 को प्रधानमंत्री जी के कर-कमलों से विक्रमोत्सव के अवसर पर विश्व की पहली 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी' का शुभारंभ कर भारतीय काल गणना परंपरा का साक्षात्कार पूरी दुनिया से कराया गया
- पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की स्मृति में ₹20 करोड़ की लागत से बनने वाले अटल स्मारक का भूमिपूजन
- शासकीय कैलेण्डर में विक्रम संवत् अंकित करना प्रारंभ
- मंडला में वीरांगना रानी दुर्गावती की प्रतिमा का अनावरण
- 1450 किमी लंबे श्रीराम वन गमन पथ के निर्माण का निर्णय
- जहाँ-जहाँ भगवान श्रीकृष्ण के चरण पड़े, उन स्थानों को तीर्थ के रूप में विकसित करने का निर्णय
- सिंहस्थ-2028 की तैयारी प्रारंभ, टास्क फोर्स गठित
- इंदौर से उज्जैन एवं ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग तथा जबलपुर से चित्रकूट और ग्वालियर से ओरछा एवं पीताम्बरा पीठ के लिए हेलीकॉप्टर सेवाएं
- वर्ष प्रतिपदा नव सम्वत्सर के शुभारंभ एवं सृष्टि आरंभ दिवस को पूरे प्रदेश में भव्य रूप में मनाने का निर्णय
- मध्यप्रदेश के श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अयोध्या में एक आस्था भवन (धर्मशाला) निर्माण करने का निर्णय
- देवालयों में लगने वाली सामग्री जैसे- भगवान के वस्त्र-आभूषण, श्रृंगार सामग्री, धातु व पत्थर की मूर्तियों के निर्माण को कुटीर उद्योग के अंतर्गत प्रोत्साहित करने स्व-सहायता समूह तथा क्षेत्र के युवाओं को इसके लिए प्रख्यात कलाकारों से प्रशिक्षण उपलब्ध कराने और मंदिरों में इन सामग्रियों के विक्रय के लिए स्टॉल की व्यवस्था करने का निर्णय
- स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के अंतर्गत चित्रकूट के घाट पर अध्यात्म के अनुभव की नवीन परियोजना का भूमिपूजन
- चित्रकूट नगर के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक विकास के लिये चित्रकूट विकास प्राधिकरण की स्थापना को स्वीकृति
- यूनेस्को के विश्व हेरिटेज सेंटर द्वारा भारत की अस्थायी सूची में मध्यप्रदेश की 6 धरोहरें सम्मिलित। ग्वालियर किला, धमनार का ऐतिहासिक समूह, भोजपुर का भोजेश्वर महादेव मंदिर, चंबल घाटी के रॉक कला स्थल, खूनी भंडारा बुरहानपुर और रामनगर मंडला का गोंड स्मारक इनमें शामिल हैं
- क्रूज टूरिज्म को गति देने के लिए मध्यप्रदेश में ओंकारेश्वर स्थित एकात्म धाम (स्टैच्यू ऑफ वननेस) से गुजरात के केवड़िया में स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक क्रूज संचालित किये जाने का निर्णय

गौ-संरक्षण एवं संवर्धन

- भारतीय नव वर्ष अर्थात इस चैत्र माह से अगले वर्ष तक गौ-वंश रक्षा वर्ष मनाने का निर्णय
- गौशालाओं में गौ-वंश के लिए बेहतर आहार हेतु प्रति गौ-वंश मिलने वाली ₹20 की राशि बढ़ाकर ₹40 करने का निर्णय
- चरनोई की भूमि से अतिक्रमण हटाए जाएंगे
- गौशालाओं को भूसा प्रबंधन के लिये आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों के लिये अनुदान तथा प्रोत्साहन
- प्रत्येक 50 किलोमीटर पर घायल गायों को इलाज के लिये परिवहन हेतु हाइड्रोलिक कैटल लिफ्टिंग वाहन का टोल व्यवस्था के अंतर्गत प्रबंध का निर्णय
- अधूरी गौशालाओं का निर्माण पूर्ण कर नई गौशालाएं प्रारंभ करने का निर्णय

स्वच्छ भारत अभियान में मध्यप्रदेश बना सिरमौर

- स्वच्छ सर्वेक्षण-2023 में देश के सबसे स्वच्छ शहर का पुरस्कार लगातार सातवीं बार इंदौर को मिला
- मध्यप्रदेश, देश का दूसरा स्वच्छतम राज्य और भोपाल स्वच्छतम राजधानी बना
- प्रदेश के 7 शहर वाटर प्लस, 361 शहर ओडीएफ डबल प्लस, एक शहर 7-स्टार, एक 5-स्टार, 24 शहर 3-स्टार और 132 शहर 1-स्टार गार्बेज फ्री श्रेणी में पुरस्कृत

अन्य उपलब्धियां

- 50वें खजुराहो नृत्य समारोह के अवसर पर 1 हजार 484 कथक कलाकारों ने एक साथ कथक नृत्य कर बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड
- ग्वालियर में आयोजित ताल दरबार में प्रदेश के 1300 से अधिक कला साधकों ने वाद्य यंत्र की धुन बजाकर गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में प्रदेश का नाम दर्ज किया
- देश में सर्वाधिक खनिज ब्लॉकों की नीलामी कर पाया प्रथम स्थान
- प्रत्येक जिले में जिला पुलिस बैंड का गठन
- भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा देशभर के 10 सर्वश्रेष्ठ थानों में देवास के सिविल लाइन थाने का चयन
- राज्यों की स्टार्टअप रैंकिंग 2022 और राष्ट्रीय स्टार्टअप पुरस्कार 2023 के अंतर्गत मध्यप्रदेश 'लीडर' के रूप में पुरस्कृत
- 'एक जिला-एक उत्पाद' के अंतर्गत बुरहानपुर को केला प्रसंस्करण क्षेत्र में विशेष कार्य के लिए राष्ट्रीय सम्मान
- प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश को बेस्ट परफार्मिंग स्टेट अवॉर्ड की श्रेणी में दूसरा स्थान
- मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड देश के बेस्ट टूरिज्म बोर्ड के रूप में सम्मानित
- मध्यप्रदेश टाइगर और चीता स्टेट के बाद बना लेपर्ड स्टेट
- अशोकनगर के चंदेरी के प्राणपुर ग्राम में ₹7 करोड़ से अधिक की लागत के देश के पहले 'क्राफ्ट हैण्डलूम टूरिज्म विलेज' का लोकार्पण
- 'एक जिला-एक उत्पाद' के तहत विभिन्न प्राचीन कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए भी बाजार, भोपाल में 'गौरवार स्मारक' का शुभारंभ
- पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय स्वशासी आयुर्वेद महाविद्यालय के चिकित्सालय को एनएबीएच सर्टिफिकेशन

भारत सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में लगातार अग्रणी

मध्यप्रदेश

- पीएम स्व-निधि योजना
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
- पीएम आवास योजना
- कृषि अवसंरचना निधि
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना
- स्वामित्व योजना
- नशामुक्त भारत अभियान
- आयुष्मान भारत योजना
- मछुआ क्रेडिट कार्ड योजना
- राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम
- प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना
- राष्ट्रीय आजीविका मिशन
- स्वच्छ भारत मिशन

R. O. No. D16105/25

मानवता के लिए अमूल्य उपहार है "योग"

योग एक ऐसी दिव्य अवस्था है जब चेतना और परम चेतना का मिलन होता है। इस अवस्था को प्राप्त करने का अवसर हर जीव के पास है। योग सनातन हिन्दू धर्म और संस्कृति का सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य उपहार है।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अथक प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। साथ ही इस बात का समर्थन किया कि "योग जीवन के सभी पहलुओं के बीच संतुलन स्थापित करने के साथ स्वास्थ्य और कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है"। उन्होंने पूरी दुनिया में समग्र स्वास्थ्य क्रांति के नये युग का सूत्रपात किया। उपचार की जगह रोकथाम पर अब अधिक ध्यान दिया जा रहा है। आज पूरा वैश्विक समुदाय प्रधानमंत्री श्री मोदी का आभार व्यक्त कर रहा है।

हम 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं। यह "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" विषय को समर्पित है। इसका उद्देश्य मानव कल्याण और एक स्वस्थ ग्रह के बीच संबंध को बढ़ावा देना है। सीधा अर्थ है कि जब शरीर और मन स्वस्थ होता है, तो हम अपने समुदाय और पर्यावरण से बेहतर सामंजस्य रख पाते हैं, उनकी सही देख-रेख कर पाते हैं।

भारतीय परंपरा में उल्लेख है कि प्रकृति ने ही तमाम योग मुद्राएं सिखाई है। यह सच है कि योग विद्या की विरासत को लगभग विस्मृत सा कर दिया गया था। हमें सिर्फ प्रयासपूर्वक जागने की जरूरत है। योग सदा से विदयमान था। किसी भी धर्म को देखें योग के दर्शन होंगे। योग और यौगिक क्रियाएं जीवन से गहरी जुडी हैं। अब एक नई और ओजपूर्ण शुरूआत हो चुकी है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा स्थापित हुई है।

R. O. No. D16105/25

शौर्य और साहस का पावन स्मरण
पूरा हो रहा जनजातीय कल्याण का प्रण

वीरांगना रानी दुर्गावती के 500 वें जन्मशताब्दी वर्ष के आरंभ पर कृतज्ञ मध्यप्रदेश का शत शत नमन

सम्मान स्वरूप संस्कारधानी जबलपुर में मध्यप्रदेश की नवगठित सरकार की

प्रथम कैबिनेट बैठक
3 जनवरी, 2024

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

"वीरांगना रानी दुर्गावती जी के 500 वें जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जनजातीय समाज के कल्याण, स्वास्थ्य और समृद्धि का जो संकल्प लिया गया है उसे पूर्ण करने के लिए मध्यप्रदेश पूरी प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रहा है।"

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जबलपुर में रू. 100 करोड़ की लागत से वीरांगना रानी दुर्गावती के स्मारक का शिलान्यास किया गया

- कक्षा 11वीं, 12वीं एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिए **छात्रवृत्ति योजना** में वर्ष 2023-24 में एक लाख से अधिक विद्यार्थियों को रू. 316 करोड़ की छात्रवृत्ति।
- **आकांक्षा योजना** में कक्षा 11वीं एवं 12वीं में अध्ययनरत रहते हुये जे.ई.ई., क्लेट, नीट आदि राष्ट्रीय परीक्षाओं के लिये प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थाओं में कोचिंग सुविधा।
- महाविद्यालयीन छात्रावास में प्रवेश नहीं मिलने पर उच्च शिक्षा के लिए **आवास भत्ता**। वर्ष 2023-24 में रू. 119 करोड़ की सहायता से एक लाख से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित।
- **विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना** में उच्च शिक्षा के लिये प्रति वर्ष 50 विद्यार्थियों को लाभांवित करने का लक्ष्य। वर्ष 2023-24 में रू. 2.51 करोड़ की सहायता।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए नवीन शिक्षा नीति के तहत 94 **सीएम राइज स्कूल** संचालित। KG-I से कक्षा 12वीं तक शिक्षा एवं सर्वांगीण विकास।
- **मुख्यमंत्री राशन आपके ग्राम योजना** में सीधा जनजातीय ग्रामों तक पहुंचा राशन। स्थानीय जनजातीय युवाओं को मिला स्वरोजगार का अवसर।
- **आहार अनुदान योजना** में विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया एवं सहरिया परिवार की महिला मुखिया को परिवार के पोषण के लिए प्रतिमाह रू. 1500। वर्ष 2023-24 में 2 लाखसे अधिक महिलाओं को रु. 215 करोड़ की सहायता।
- **सिकल सेल उन्मूलन मिशन** प्रदेश के सभी जनजातीय विकासखण्डों में लागू।
- **जनजातीय क्षेत्रों में बस्तियों का विकास** - विद्युतीकरण, पम्पों का ऊर्जीकरण, पेय जल आपूर्ति। सामुदायिक भवन निर्माण, छात्रावास, बस्तियों में सी.सी. रोड आदि बुनियादी निर्माण। वर्ष 2023-24 में रू. 38 करोड़ से 627 निर्माण।
- जनजातीय वर्ग के लिए 63 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय, 81 कन्या शिक्षा परिसर एवं 08 आदर्श आवासीय **विशिष्ट विद्यालय** संचालित।
- विशेष पिछड़ी जनजाति जिलों में **कौशल विकास केंद्र** संचालित।
- **वन अधिकार** अधिनियम 2006 के अन्तर्गत प्रदेश में 6 लाख से अधिक दावे प्राप्त, जिनमें से 2 लाख 70 हजार दावों को मान्यता। 3 लाख 62 हजार से अधिक निरस्त दावों का पुनः परीक्षण जारी।
- लगभग 35 हजार निरस्त वनाधिकार दावों का पुनः परीक्षण कर मान्य किया गया।
- **प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना** में विकास कार्यों के लिए 7307 ग्राम चयनित।
- जनजातीय क्षेत्रों में ग्राम सभाओं को विशेष अधिकार देने के लिये **पेसा नियम** लागू।
- जनजातीय युवाओं के लिये **भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोज़गार योजना, टंट्या मामा आर्थिक कल्याण** जैसी योजनाएं संचालित।

मध्यप्रदेश शासन

R. O. No. D16105/25

रामराज्य बनेगा हमारी पहचान
मोदी जी की गारंटी का परिणाम

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है। 21वीं सदी के भारत में अपार संभावनाएं छुपी हुई हैं। हम प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश को जनहित और विकास में सबसे अग्रणी राज्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

एक माह के प्रयास
दो गुना हुआ विश्वास

- लाउडस्पीकर/डीजे का अनियंत्रित प्रयोग प्रतिबंधित
- खुले में मांस, मछली की बिक्री पर प्रतिबंध
- हुकुमचंद मिल के 4800 श्रमिक परिवारों को रू. 224 करोड़ का बकाया भुगतान
- तेंदूपत्ता संग्राहकों का मानदेय रू. 3 हजार प्रति बोरा से बढ़ाकर किया रू. 4 हजार, 35 लाख तेंदूपत्ता संग्राहकों को लगभग रू.165 करोड़ का लाभ
- यातायात सुगमता के लिए भोपाल में बीआरटीएस हटाने का निर्णय
- श्रीअन्न को बढ़ावा देने के लिए रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना में किसानों को प्रति किलो रू. 10 का अतिरिक्त प्रोत्साहन
- दो लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई के विस्तार के लिए रू. 5 हजार करोड़ की परियोजनाएं मंजूर
- नागरिकों की सुविधा के लिए प्रदेश में संभाग, जिले, तहसील एवं पुलिस थानों की सीमाओं के पुनर्निर्धारण की प्रक्रिया प्रारंभ
- एक हजार से अधिक पुलिसकर्मियों को पदोन्नति
- उज्जैन, इंदौर और धार जिले में जहां-जहां भगवान श्रीकृष्ण के चरण पड़े हैं वहां तीर्थ स्थलों का विकास होगा
- प्रदेश में श्रीराम वन पथ गमन के विकास की कार्य योजना को चरणबद्ध तरीके से लागू करने का निर्णय
- नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी और रानी दुर्गावती की प्रेरणादायी वीरगाथा के विषय को शामिल करने का निर्णय
- हर जिले में एक शासकीय महाविद्यालय का पीएम उत्कृष्टता महाविद्यालय के रूप में उन्नयन
- रू. 350 करोड़ लागत से 6.67 किमी का इंदौर में बनेगा एलिवेटेड कॉरिडोर
- ग्रीन बॉन्ड जारी कर जुटाए गए रू. 308 करोड़ की राशि से खरगोन जिले के जलूद गांव में ऊर्जा संयंत्र की स्थापना
- स्वच्छ सर्वेक्षण अवॉर्ड 2023 में मध्यप्रदेश फिर आगे, इंदौर को लगातार सातवीं बार देश की स्वच्छतम सिटी का अवॉर्ड, भोपाल बना देश की स्वच्छतम राजधानी

मध्यप्रदेश शासन

R. O. No. D16105/25

जनजातीय गरिमा की स्थापना के साथ आर्थिक समृद्धि का महाअभियान

मध्यप्रदेश में तीन विशेष पिछड़ी जनजातियों बैगा, भारिया एवं सहरिया के अलावा कई जनजातीयां रहती हैं। जनजातीय समुदाय के सामाजिक-शैक्षणिक विकास और संस्कृति संरक्षण और हर क्षेत्र में उन्हें प्रतिनिधित्व देने के नवाचारी प्रयासों को प्रत्येक योजना में शामिल किया गया है। इन जनजातीय समूहों के सामाजिक और आर्थिक कल्याण से जुड़े पीएम जनमन में बैगा, भारिया एवं सहरिया जनजातियों के जीवन में पूर्णत: बदलाव के लिये नई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में रई रणनीतियों के साथ प्रभावी प्रयास किये जायेंगे।

हर जरूरी सुविधा उपलब्ध होगी

जनजाति समूह के सभी लोगों को उनकी पसंदीदा डिजाईन के अनुसार शौचालय सहित पक्का मकान बनाकर दिया जायेगा। हर घर में नल से स्वच्छ जलापूर्ति की जाएगी। इन जनजातियों के गांवों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए गांव-गांव तक पक्की सड़कें बनाई जायेंगी।

शैक्षणिक अधोसंरचना का विस्तार

स्कूली बच्चों को मिड-डे-मील (मध्यान्ह भोजन) उपलब्ध कराया जाएगा। इन जनजातियों को बैंकिंग सुविधाओं का सीधा लाभ देने के लिये प्रधानमंत्री जनधन योजना से जोड़ा जायेगा। साथ ही इस वर्ग की बालिकाओं को सुकन्या समृद्धि योजना का लाभ भी दिलाया जायेगा।

आवास सुविधाएं बढ़ेंगी

विशेष पिछड़ी जनजातियों की मात्र 100 जनसंख्या वाले गांवों को भी पक्की सड़क से जोड़ा जायेगा। कुल 981 संपर्क विहिन बसाहटों में 2403 किलोमीटर लम्बाई के 978 मार्ग एवं 50 पुल बनाये जायेंगे। इस कार्य के लिए 3 वर्षों में 2354 करोड़ रूपये निवेश किये जाएंगे। शासन द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातीय बहुल क्षेत्रों में प्रति हितग्राही आवास निर्माण के लिये 2 लाख रूपये दिये जायेंगे।

पढ़ाई की पूरी व्यवस्था

जनजातीय क्षेत्रों में 63 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय संचालित हैं। इनमें 25 हजार विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना में कक्षा 11वीं, 12वीं एवं महाविद्यालयीन कक्षाओं में पढ़ रहे दो लाख से अधिक विद्यार्थियों को 319 करोड़ रूपये छात्रवृत्ति वितरित की जा चुकी है।

उच्च माध्यमिक शिक्षक, माध्यमिक शिक्षक तथा प्राथमिक शिक्षक संवर्ग में 16 हजार 776 पदों पर भर्ती की गई है। विभाग के अधीन 1078 आश्रम, 197 जूनियर छात्रावास, 1032 सीनियर छात्रावास, 210 उत्कृष्ट सीनियर छात्रावास एवं 154 महाविद्यालयीन छात्रावास संचालित हैं। इनमें एक लाख 31 हजार 470 विद्यार्थी निवासरत हैं।

रोज़गार के भरपूर अवसर

जनजातीय कार्य विभाग के अधीन मध्यप्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास निगम द्वारा संचालित 'भगवान बिरसा मुण्डा स्वरोजगार योजना' में अब तक 561 पात्र हितग्राहियों को 22 करोड़ 10 लाख 64 हजार 895 रूपये वित्तीय सहायता दी जा चुकी है।

R. O. No. D16105/25

मध्यप्रदेश सरकार की

"एक संवेदनशील पहल"

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

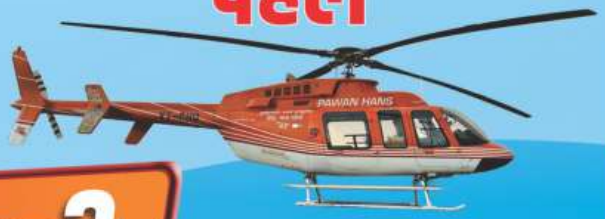

पीएमश्री

एयर एम्बुलेंस सेवा

प्रदेश के दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में गंभीर रूप से बीमार, दुर्घटनाग्रस्त लोगों की आपातकाल में त्वरित सहायता के लिए मध्यप्रदेश सरकार की एक परिवर्तनकारी पहल। अत्याधुनिक चिकित्सा सेवाओं और उपकरणों से सुसज्जित इस सेवा के माध्यम से मुश्किल समय में त्वरित जीवनरक्षक समाधान मिलने से आमजन को समय रहते मिलेगी उचित उपचार की सुविधा।

स्वस्थ और सुरक्षित मध्यप्रदेश का संकल्प

- ₹ 592 करोड़ की लागत से उज्जैन में प्रदेश की पहली मेडिसिटी एवं मेडिकल कॉलेज का भूमिपूजन
- वर्तमान में प्रदेश में 17 शासकीय एवं 13 निजी चिकित्सा महाविद्यालय संचालित
- 55 जिला चिकित्सालयों में भारतीय जन औषधि केंद्रों और 800 आयुष आरोग्य मंदिर का संचालन प्रारंभ
- 8 शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय निर्माणाधीन एवं पीपीपी मोड पर 12 चिकित्सा महाविद्यालय शीघ्र होंगे प्रारंभ
- 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग आयुष्मान भारत योजना से ले रहे लाभ

आपातकालीन सहायता के लिए सम्पर्क करें : 9111777858

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

मध्यप्रदेश शासन

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2025

R. O. No. D16105/25

MPIDC
MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

मध्यप्रदेश में उद्योग और समृद्धि का नया युग

इन्वेस्ट मध्यप्रदेश
अनंत संभावनाएं
ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025

₹30.77 लाख करोड़ के रिकॉर्ड निवेश प्रस्ताव

21.40 लाख नये रोज़गार

25000+	60+ देश 100+ प्रतिनिधि	9	300+	600+	5000+	500+
रजिस्ट्रेशन		पार्टनर देश	कम्पनियां	बीटजी मीटिंग	बीटबी मीटिंग	प्रवासियों की भागीदारी

प्रदेश की क्षमताओं में निवेशकों के विश्वास
के लिए हृदय से आभार...

R. O. No. D16105/25

हौसला

– रीना सोनालिका

यह कहानी है एक छोटी–सी चिड़िया की है। जो छोटी–तो थी, किन्तु उसकी हिम्मत कम नहीं थी। और बार–बार घोंसला टूट जाने के बाद भी उसने अपनी हिम्मत नहीं हारी और फिर से उसने अपना घोंसला बनाया। और उसने दुनिया से एक बात कही। **हारेगा वह जिसने हारने की सोच रखी है। मैं क्यों हारूँगी, मैंने तो जीतने की सोच रखी है।** जानती हूँ मैं उम्मीदों पर कितने बार पानी फिरेंगे। पर हर बार मेरे हौसले बुलंद होंगे।

किसी जंगल में एक छोटी सी चिड़िया अपनी माँ के साथ किसी पेड़ पर रहती थीं। चिड़िया की माँ हमेशा बीमार रहती थी, और बीमार रहने के कारण उसे अनुभव होने लगा कि वह अपने बच्चों की देखभाल अच्छी तरह से नहीं कर पाएगी। क्योंकि उसकी हालत बहुत गंभीर थी। और उसने निश्चय किया कि वह अपने बच्चे को किसी और चिड़िया को दे देगी, जो उसके बच्चे का देखभाल करेगी।

और उसने अपने बच्चे को किसी और चिड़िया के घोंसले में दे आई, और उसने कहा कि तुम मेरे बच्चे की देखभाल करना, दूसरी चिड़िया पहली चिड़िया की बात मान ली क्योंकि वो दोनों सखी थी। पहली चिड़िया की हालत गंभीर थी। और उसके बचने की हालत नहीं थी, दूसरी चिड़िया ने पहली चिड़िया के बच्चे को अच्छे से रख लिया यह देखकर पहली चिड़िया बहुत प्रसन्न हो गई।

और कुछ देर के बाद वह संसार को विदा कह गई। छोटी–सी चिड़िया अपने माँ के मरने के बाद बहुत दुखी हो गई। लेकिन दूसरी चिड़िया ने छोटी–सी चिड़िया को रख ली और उसे हौसला दिया। छोटी–सी चिड़िया दूसरी चिड़िया के साथ खुशी... खुशी रहने लगी और अपना जीवन.... यापन करने लगी। कभी...कभी वो घोंसले से बाहर जाती और दाना चुग के लाती, यह देखकर दूसरी चिड़िया को बहुत जलन हुआ और उसे अनुभव होने लगा कि छोटी.... सी चिड़िया अब छोटी नहीं रही बल्कि बहुत बड़ी हो गई है। और अपना जीवन यापन कर सकती है। इसलिए उसने छोटी–सी चिड़िया को अपने घोंसले से निकाल दिया।

छोटी–सी चिड़िया बहुत उदास हो गई और अपना ठिकाना ढूँढ़ने लगती है, पहले वो माँ के बनाए हुए घोंसले में रहने जाती है। जो एकदम से टूटा हुआ था। उसने हिम्मत करके एक–एक तिनका लाकर घोंसले की मरम्मत करके उसे फिर से बनाया और उसमें रहने लगती है। लेकिन उस पेड़ पर जितनी भी चिड़ियाँ थीं, उन्हें यह बात का पसंद नहीं आयी। चिड़िया के समुदाय में छोटी–सी चिड़िया, सबसे छोटी थी। और उसकी ये हिम्मत देखकर सबको बहुत आश्चर्य हुआ और उन्हें ये अनुभव हुआ कि कहीं हमसे ये आगे नहीं निकल जाए और हमारी नाक नहीं कट जाए तथा समाज में हमारी कोई इज्जत न रह जाए।

इसलिए सबने मिलकर छोटी–सी चिड़िया का घोंसला तोड़ दिया। और उसे पेड़ से निकाल दिया छोटी–सी चिड़िया फिर से उदास हो गई। और काफी परेशान भी। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। और उसने नया ठिकाना खोज लिया।

कहीं दूसरे पेड़ पर, और वहाँ पर उसने अपना नया घोंसला बनाया तथा रहने लगी। लेकिन जिस पेड़ पर उसने अपना घोंसला बनाया, उस पेड़ पर कौआ का बसेरा था, इसलिए छोटी–सी चिड़िया का रहना उसे पसंद नहीं आया। इसलिए कौआ का समुदाय ने उसे पेड़ से निकाल दिया।

अब छोटी–सी चिड़िया और परेशान होने लगी

और सोचने लगी वह करे तो क्या करें? लेकिन फिखर भी उसने हिम्मत नहीं हारी, और उस स्थान से बहुत दूर किसी और पेड़ पर अपना घोंसला बनाया। और अपना जीवन यापन प्रारंभ कर दिया। लेकिन ये सिलसिला अधिक दिन तक नहीं चला। एक दिन पेड़ पर बंदर आया और पेड़ को तहस, नहस कर दिया तथा घोंसले को तोड़ दिया।

छोटी–सी चिड़िया की परेशानी दिनों दिन बढ़ते जा रही थी। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। और उसने एक छोटे से पेड़ पर अपना घोंसला बनाया, जिस पर किसी का डर नहीं था। क्योंकि पेड़ बहुत पतला और उसकी शाखाएँ बहुत कमजोर थीं। लेकिन छोटी–सी चिड़िया अपना जीवन जी रही थी। किन्तु खुशी अधिक दिनों तक नहीं चली।

इतना तेज आँधी–तूफान आया कि बारिश के झटके ने घोंसले को तोड़ दिया। छोटी–चिड़िया ने किसी तरह अपनी जान बचाई। अब उसे समझ नहीं आ रहा था। कि अपना घोंसला कहाँ बनाए? फिर वह आकाश में उड़ने लगी और अपना ठिकाना खोजने लगी। उसने बड़ा–सा मकान देखा जिसकी छत्त और दीवार बहुत मजबूत था। तथा खिड़की भी बड़ी और ऊँची थी। इसी खिड़की में छोटी–सी चिड़िया ने घोंसला बनाया और वह खुशी–खुशी रहने लगी।

– चास (झारखंड)

अमृत वचन

तुलसी साथी बिपति के
बिद्या, बिनय बिवेक।
साहस सुकृत सुसत्यव्रत
राम भरोसो एक।।

– गोस्वामी तुलसीदास

छः अँगुल मुस्कान

अध्यापक ने कक्षा में प्रश्न पूछा, ''बताओ बच्चो, शिवाजी ने पहली लड़ाई किससे लड़ी थी?''

''जी तलवार से'' कक्षा के एक बच्चे ने अपनी सीट से तपाक से खड़े होकर उत्तर दिया।

*****

उस दिन वोट पड़ रहे थे। एक आदमी किसी नकली नाम से वोट देने गया। बूथ में जो अधिकारी बैठा था, उसने पूछा।

'आपका नाम?'

'रामलाल।'

'पिता का नाम?'

कुछ देर वह आदमी सोचता रहा, फिर बोला, 'ठहरिए पूछ कर आता हूँ।'

*****

गोपाल–मोहन! चाय लाभदायक है या हानिकारक?

मोहन–भाई यदि पिलाने वाला मिल जाए तो लाभदायक है, और यदि पिलानी पड़ी तो हानिकारक।

*****

एक सेठ– आपका लड़का मोटर कार में घूमता है और आप पैदल, क्या बात है?

दूसरा सेठ– वह धनवान बाप का बेटा है।

*****

'बाबा! आप बादाम खा सकते हैं?'

'नहीं बेटा! मेरे तो मुँह में दाँत ही नहीं है।'

'अच्छा तो यह बादाम रख लो, मैं शाला से लौटने पर आपसे ले लूँगा।'

श्रेया की शपथ

– रन्दी सत्यनारायण राव

श्रेया के पिताजी अभी कार्यालय से घर पहुँचे ही थे कि रसोई घर से जोर–जोर से चीखने–चिल्लाने की आवाज सुन चौंक पड़े। और उस ओर दौड़ पड़े। उन्होंने देखा उनकी दस वर्षीया बेटी 'श्रेया' किसी बात पर रो–रो कर अपना बुरा हाल किए हुए थी। उसकी माँ गैस चूल्हे पर उसके लिए 'चपाती' बना रही थी।

वह अपने पिताजी को सामने पाकर और जोर से रोते हुए अपनी माँ की शिकायत करते हुए बोली– ''पिताजी! देखिए न, आज माँ ने खाने को बर्गर, पिज्जा, कुछ नहीं दिया कहती है। आज चपाती खा कर रहो, पैसे समाप्त हो गए। ऑनलाईन आर्डर कर अब बाहर से चीजें नहीं मँगवा सकती।

आप रोज मुझे चाउमीन, चिप्स, मंचूरियन, चाट मसाला, लिट्ठी चोखा मँगवा कर खिलाते रहते हो, और माँ है कि चपाती, कचौरी, पूरी से आगे बढ़ती ही नहीं है। श्रेया की बात सुन, उसकी माँ ने उसके डाँटते हुए कहा– ''प्रतिदिन शाला से घर आते ही तुम्हें बाहर की चटकारे वाली चीजें खाने को चाहिए। तुम्हारे पिताजी की इतनी आमदनी नहीं कि ऐसा प्रतिदिन मँगवा कर खिला सकें। और पता भी है कि बाजार की खाने की सामग्री, स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकारक होती है?

क्या यह बात तुम्हारे विद्यालय में पढ़ाई नहीं जाती? आज से यह अपनी बुरी आदत सुधार लो और जो घर पर बना कर देती हूँ, उसे ही खा कर पड़ी रहो। इससे स्वास्थ्य भी अच्छा बना रहेगा।''

और फिर वह श्रेया के पिताजी की ओर मुड़ कर बोली– ''श्रेया को आपके ही लाड़–प्यार ने बिगाड़ रखा है।''

श्रेया के पिताजी, उसकी माँ की बात से सहमत होते हुए भी, अपनी बिटिया को दुखी नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने श्रेया का पक्ष लेते हुए कहा– ''ठीक है भागवान! हमारी बेटी की इच्छा भी तो कोई चीज है। शाला से थक हार कर घर आती है तो, अपनी पसंद की चीज खा कर प्रसन्न हो जाती है। अब शांत हो जाओ बेटा.... लो तुम्हारी पसंद की भेलपूरी मँगवाए देता हूँ। अभी आ जाएगा, और उन्होंने ऑनलाईन आर्डर दे दिया।

श्रेया की माँ जल भुनकर रह गई। इधर घर का बजट भी बिगड़ता जा रहा था। यह सब चल ही रहा था कि अचानक एक दिन श्रेया की माँ के पास शाला से प्राचार्य का फोन आया– ''हैलो.... मैं, श्रेया के विद्यालय से प्राचार्य बोल रही हूँ क्या श्रेया की माताजी

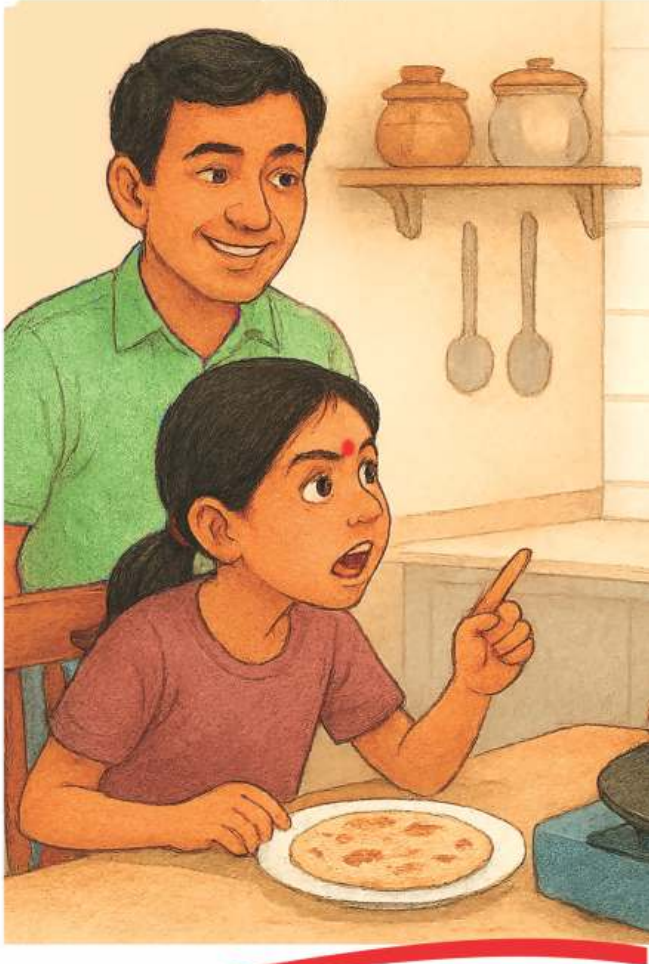

से बात हो सकती है अर्जेन्ट केस है।'' श्रेया की माँ ने फोन उठाकर उत्तर दिया– ''जी मैं श्रेया की माँ ही बोल रही हूँ। क्या बात है प्राचार्य जी?''

प्राचार्य की आवाज में घबराहट थी, इसका आभास श्रेया की माँ को हो गया था। कुछ अनहोनी की आशंका से वह भी घबरा गई। फिर उन्होंने पूछा– ''क्या बात है जी?'' प्राचार्य ने बताया– ''आपकी बेटी श्रेया को बहुत जोरों से पेट में दर्द हो रहा है। वह असहनीय पीड़ा से तड़प रही है। कृपया आप जल्दी से आकर उसे घर ले जाएँ।'' यह सुनकर श्रेया की माँ बुरी तरह से घबरा गई। तुरन्त ही ऑटो रिक्षा से विद्यालय जाकर श्रेया को घर ले आई।

घरेलू उपचार के बाद भी श्रेया की स्थिति बिगड़ती ही जा रही थी। श्रेया की हालत का पता चलते ही उसके पिताजी भी दौड़े आए। और श्रेया को निकट के चिकित्सालय में पहुँचाया।

डॉक्टर ने प्राथमिक जाँच कर उसे और गहन चिकित्सा के लिए भर्ती होने को कहा। श्रेया को डॉक्टर ने बताया– ''श्रेया बेटा! आपको कुछ नहीं हुआ है, केवल एक बात पर ध्यान दीजिए कि बाहर के उपलब्ध खाद्य पदार्थ नहीं खाने हैं, बाजार की चीजों में चटकारापन और स्वाद लाने के लिए बहुत–सी हानिकारक सामग्री, उपयोग में लाई जाती है।

यह विभिन्न प्रकार की पेट की बीमारियों को पैदा करते हैं।

ऐसे पदार्थों के सेवन से, आरम्भ में तो पता नहीं चलता किन्तु हमेशा प्रयोग करते रहने पर यह खाद्य पदार्थ पाचन–तंत्र पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। और यह सस्ते न होकर महँगे भी होते हैं।''

श्रेया को ठीक होने में समय लग रहा था। वह देख रही थी, उसकी बीमारी के कारण, पिताजी को भी छुट्टी लेनी पड़ रही थी। माँ को घर और उसकी देखभाल में कष्ट हो रहा था। उसने जाना कि अस्पताल आकर वही बीमार नहीं हुई है। बल्कि माँ–पिताजी भी उसकी सेवा करने में बीमार हो गए से लग रहे हैं।

अब श्रेया को अपनी जिद्द और माँ की बात को अनसुना करने का बहुत पछतावा हो रहा था। उसने शपथ ली कि अब से वह घर में माँ के हाथ का बना खाना ही खाएगी।

पिताजी से बाहर के खाद्य पदार्थ मँगवाने की हठ नहीं करेगी एक सप्ताह बाद आने वाले 'दीपावली' त्योहार पर माँ के हाथ की बनाई हुई मिठाई जी भर कर खाएगी। बाजार से खरीदे गए खाद्य पदार्थों को तो हाथ भी न लगाएगी। उसके निर्णय से उसके माँ–पिताजी बहुत प्रसन्न हुए।

– जमशेदपुर
(झारखण्ड)

साइड

– माणक चन्द सुथार

मुड़ने के लिए जैसे ही मैंने अपना हाथ निकाला, पीछे से नन्ही–सी आवाज आई– ''साइड लेने की आवश्यकता नहीं काका जी! मैं भी इधर ही मुड़ रहा हूँ।'' सुबह का समय था। सड़क सुनसान थी। बस एक बच्चा अपनी छोटी साइकल पर सवार होकर मेरे पीछे चल रहा था, उसी ने ये शब्द कहे थे। मैं अपनी मोटरसाइकिल रोक कर खड़ा हो गया। बच्चे के मुख से छलकता उत्साह व उमंग बता रहा था। कि उसने साइकिल चलाना, नया–नया सीखा है।

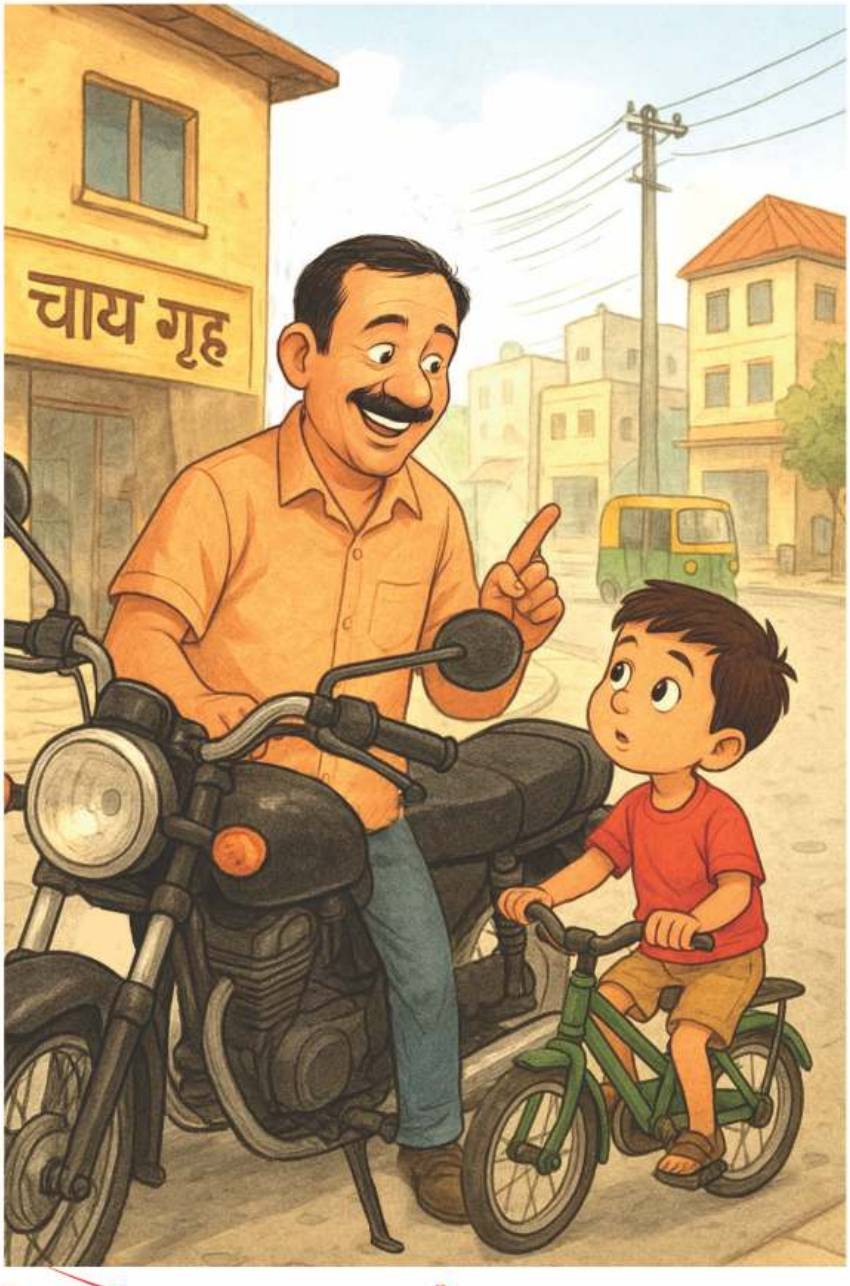

मैंने बच्चे को रोका और पूछा– ''साइड क्यों लेते हैं?'' ''जब हमें एक ओर मुड़ना होता है।'' ''साइड लेने का सही प्रकार क्या है?'' मासूम मुखड़ा निरुत्तर। उसके कंधे पर हाथ रखते हुए मैंने कहा– ''भले ही सड़क खाली हो या भीड़भाड़ भरी, मुड़ने से पहले हमेशा साइड अवश्य लेनी चाहिए। साइड लेने की आदत अपने स्वभाव में ढाल लो। हाँ केवल हाथ दिखा देना ही पर्याप्त नहीं होता सही साइड़ के लिए। जब भी मुड़ना हो तो पहले पीछे देखो, यदि कोई वाहन तेज गति से आ रहा है तो पहले उसे जाने दो तत्पश्चात साइड का संकेत देकर धीरे से अपनी राह मुड़ जाओ।''

मेरे शब्द सुनकर बच्चे के चेहरे पर विद्यार्थी सा उल्लास आ गया। कुछ पल, मौन देखते रहे एक–दूसरे को मित्र की तरह और फिर दोनों मुस्कुराते हुए अपने–अपने वाहन पर अपने–अपने रास्ते पर चल पड़े।

– बीकानेर (राजस्थान)

नहले पे दहला
अगर मैं तुम्हें पूरा एक रुपया दूं तो क्या-क्या कर लोगे?
क्यों रे साला हीरो.. बनाने को मैं ही मिला..
अजी साब, मैं उससे एक शानदार कार खरीदूंगा..
फिर भीख मांगने के लिए सोने की कटोरी बनवाऊंगा..
और जो बचेगा उससे भीख मांगने का दफ्तर खोलूंगा ...क्यों है कोई शक ?
नहीं. लो एक रुपया और अपने मन की पूरी कर लो.

आपदा को बनाया अवसर

– रजनीकांत शुक्ल

विभा देवी बिहार राज्य के पटना जिले के एक गाँव खुसरोपुर की रहने वाली थीं। उनकी शादी नालंदा जिले के बख्तियारपुर थाने के अंतर्गत आने वाले हरनौत क्षेत्र के गाँव मिसी में संतोषकुमार के साथ हुई थी।

उनके घर में दो बेटियों और एक बेटे के बाद जब एक नन्हीं बेटी ने जन्म लिया तो उन्होंने बड़े प्यार से उसका नाम गोल्डी कुमारी रखा। जब उनकी वह बच्ची केवल दस महीने की थी तब उसे एक बार बुखार आ गया। चिंतित माँ विभा देवी रेल द्वारा उसे दिखाने के लिए डॉक्टर के पास लेकर जा रही थीं। रेल स्टेशन पर रुकी विभा देवी उतरने लगीं कि अचानक रेल एक झटके से फिर आगे बढ़ गई।

इस झटके में विभा देवी सँभल नहीं पाईं और गोल्डी उनके हाथों से छूटकर नीचे पटरियों के पास जा गिरी। उसे बचाने के चक्कर में विभा जो नीचे झुकीं तो डिब्बे की चपेट में आ गईं। लोगों ने जब तक दौड़कर उन्हें पकड़ने का प्रयत्न किया तब तक बहुत देर हो चुकी थी। इस दुर्घटना में विभा देवी की मृत्यु हो गई। गोल्डी की जान बच गई किन्तु उसका बायाँ हाथ कट गया।

अब बिना माँ की इस एक हाथ की बच्ची गोल्डी का जीवन कैसे चलेगा यह समस्या सामने आई। जो भी उसकी कहानी सुनता उसे देखता बस एक आह भर कर रह जाता। लेकिन गोल्डी के दादा–दादी नाना–नानी और परिवार से दूसरे सदस्यों ने गोल्डी को उसके हिस्से का भरपूर प्यार दिया। वे उसकी माँ को तो वापस नहीं ला सकते थे किन्तु उन्होंने उसे कभी किसी प्रकार की कमी नहीं होने दी।

समाज में ऐसा देखा गया कि यदि किसी बड़े व्यक्ति के साथ ऐसा हादसा हो जाता कि उसका एक हाथ हमेशा के लिए चला जाए तो वह अपने जीवन से बिलकुल निराश हो जाता है। उसे लगता है कि उसका पहाड़–सा जीवन अब बिना एक हाथ के कैसे गुजरेगा? हताशा और निराशा उसके मन में अपना स्थाई घर बना लेती है। किन्तु गोल्डी कुमारी के साथ यह हादसा चूँकि बहुत छोटी आयु मात्र दस माह की आयु में घटित हुआ था और घर के वातावरण में उसे सभी का पूरा प्यार और सहयोग मिलता रहा।

इसलिए बचपन से ही उसे इसका अहसास कम हुआ और उसका आत्मविश्वास बढ़ता रहा। उसने अपनी इस अक्षमता को अपनी कमजोरी नहीं बल्कि अपनी ताकत बना लिया।

नालंदा जिले के हरनौत के ही एक निजी विद्यालय में जिन दिनों वह पढ़ रही थी। उसने सामान्य श्रेणी के बच्चों के साथ पढ़ाई और खेलकूद की प्रतियोगिताओं में भाग लेना शुरू कर दिया। जब वह आठवीं कक्षा में थी तभी गोल्डी ने शारीरिक रूप से सक्षम बच्चों के साथ बराबरी से खेलते हुए पहली बार में ही शॉटपुट और भाला फेंक में पहला स्थान अर्जित कर सबको हैरानी में डाल दिया।

जब सभी ने उसकी खूब प्रशंसा की तो गोल्डी ने इसी क्षेत्र में अपनी संभावनाएँ तलाशने के लिए मेहनत करनी शुरू कर दी। उसने अपने आप को इन्हीं खेलों में निखारने के प्रयास शुरू किए। घर के लोगों ने भी ऐसे में उसका हौसला बढ़ाने में कोई कोर कसर न उठा रखी।

अपनी लगन और मेहनत के बल पर गोल्डी ने आने वाली सभी प्रतियोगिताओं में न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराई बल्कि वह सबसे आगे ही आगे रही। जब उनके घर के लोगों ने गोल्डी की इन उपलब्धियों को देखा तो उनकी खुशियों की सीमा न रही। उन्होंने गोल्डी को और भी प्रोत्साहित किया। फिर इसका सार्थक परिणाम भी निकला। गोल्डी ने अपने जिले और राज्य में ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाना शुरू कर दिया।

गोल्डी ने अपने लिए ऐसे खेलों को चुना था कि जिनमें शारीरिक बल के साथ-साथ शरीर के संतुलन को बनाए रखना भी बेहद जरूरी होता है। हम सभी लोग जानते हैं शाटपुट, डिस्क थ्रो और भाला फेंक जैसे खेल इसी श्रेणी में आते हैं। संतुलन के लिए जहाँ दोनों हाथों की आवश्यकता होती है वहाँ गोल्डी ने केवल एक हाथ से ही लगन और मेहनत से अभ्यास करके हर बार विजय का परचम फहराया।

गोल्डी कुमारी जैसे-जैसे इन क्षेत्रों में एक से बढ़कर एक उपलब्धियाँ अर्जित करती रहीं वहीं घर के लोगों ने उसको कदम-कदम पर सहारा और सहयोग देकर प्रोत्साहित किया। परिणाम यह हुआ कि जब २०२३ में गुजरात राज्य के नाडियाड में १२वीं राष्ट्रीय जूनियर, सब जूनियर पैरा एथलीट चैम्पियनशिप प्रतियोगिता आयोजित हुई तो गोल्डी कुमारी ने शॉटपुट प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया।

भारतीय पैरालंपिक समिति २०२४ द्वारा आयोजित १३वीं जूनियर और सब जूनियर राष्ट्रीय एथलेटिक्स चैम्पियनशिप प्रतियोगिता बैंगलूरू में गोल्डी ने अनेक क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी। उन्होंने डिस्कस थ्रो में स्वर्ण और भाला फेंक तथा शॉटपुट में रजत पदक अपने नाम किए।

वर्ष २०२४ में ही थाईलैंड में हुई विश्व युवा खेल प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए गोल्डी कुमारी ने शॉटपुट में स्वर्ण और डिस्क और भाला फेंक प्रतियोगिता में काँस्य पदकों से अपनी झोली भर कर भारत को गौरवान्वित किया।

मात्र सोलह वर्ष की आयु में उनकी इन उपलब्धियों को देखते हुए उनका नाम प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए भेजा गया। जिसमें उनका चयन कर लिया गया।

राष्ट्रीय वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२४ को गोल्डी सहित देश भर के चुने हुए सत्रह ऐसे

प्रतिभाशाली बच्चों को देश की राजधानी दिल्ली में आमंत्रित किया गया। जहाँ राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी ने इन बच्चों को देश के बच्चों को मिलने वाला सर्वोच्च पुरस्कार 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' प्रदान किया। पुरस्कार पाने से पूर्व इन बच्चों की भेंट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से भी हुई जिन्होंने सभी बच्चों की प्रतिभा की सराहना की।

इस पुरस्कार को पाकर गोल्डी बहुत उत्साहित हैं। वह कोलकाता के स्पोर्टस् अथारिटी ऑफ इंडिया सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में सुस्मिता सिंह रॉय से उच्च प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। उनका सपना आने वाले पैरा ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए अपने परिवार गाँव और समाज का नाम रोशन करना तथा देश के लिए स्वर्ण पदक जीतना है। हम सभी यही कामना करते हैं कि गोल्डी का देश के लिए गोल्ड पाने का यह सपना अवश्य पूरा हो।

नन्हे मित्रो!

बना आपदा को एक अवसर, हम आगे को बढ़ते जाएँ
ऐसे काम करें हम, सब जिनको देख प्रेरणा हमसे पाएँ
लगी लगन जो चले निरन्तर, तो है पाना सब कुछ संभव
सोना तो क्या चीज, खदानें हम सब हीरों की पा जाएँ।

– दिल्ली

पुस्तक परिचय

डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ने विविध विधाओं में प्रचुर लेखन किया है। अनेक कृतियों से बाल साहित्य का भण्डार रत्नपूरित किया है। आप बच्चों के लिए उनकी सूर्यभारती प्रकाशन २५९६, नई सड़क दिल्ली-११०००६ से प्रकाशित बाल कविताओं की तीन सचित्र पुस्तकों का परिचय प्रस्तुत हैं-

कितने प्यारे पंछी हमारे
मूल्य- १०५/-

आकाश में उड़ते नदी तालाबों के किनारे या बगीचों में चहचहाते पंछी कितने प्यारे लगते हैं। बच्चे कुछ को पहचानते हैं कुछ को नहीं। छोटी-छोटी ४४ बाल कविताओं में ऐसे ४४ पक्षियों का सचित्र परिचय कराती है यह पुस्तक।

कितने प्यारे जानवर हमारे
मूल्य- १५०/-

जानवर पालतू हों या जंगली लेकिन उनके रूप गुण स्वभाव और गतिविधियाँ सदैव बच्चों के विशेष आकर्षण का कारण बनी रहती है। ४४ बाल कविताओं में आपके जाने-अनजाने ४४ जानवरों का चित्रमय परिचय है इस पुस्तक में।

कविताओं में हिंदी वर्णमाला
मूल्य- १६०/-

वर्णमाला तो हम पहली कक्षा में ही सीखने लगते हैं यह भाषा शिक्षण का सबसे आरंभिक पाठ है। डॉ. अग्रवाल ने इन वर्णमाला के अक्षरों को बाल कविताओं में ढाल कर और भी रोचक बना दिया है।

श्री. कमल चौपड़ा बाल साहित्य संसार के जाने माने लेखक हैं। आपकी दो रोचक कृतियाँ आत्माराम एण्ड संस कश्मीरी गेट दिल्ली-११०००६ से प्रकाशित हुई हैं। उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

जरा संभल के
मूल्य- ३९५/-

उपन्यास बालसाहित्य की लम्बी रचना होते हैं जिनमें केन्द्रीय पात्रों के साथ अनेक घटनाक्रम निरंतर खुलते परस्पर मिलते आगे बढ़कर बच्चों को अन्त तक पढ़ने की उत्सुकता जगाते हैं। यह देशभक्ति, साहस व सूझबूझ से भरा एक रोचक बाल उपन्यास है।

हर कदम परीक्षा
मूल्य- ५९५/-

२५ रोचक बाल कहानियों का यह संकलन बाल पाठकों को अन्त तक बाँधे रखता है। सुन्दर चित्रों से कहानियों का आकर्षण और भी बढ़ गया है।

घर बाहर हो स्वच्छ

– गिरिजा कुलश्रेष्ठ

रजनी– एक गृहिणी।

प्रिया– रजनी की बेटी आयु दस वर्ष।

शैलेन्द्र (शैलू)– रजनी का बारह वर्ष का बेटा।

शांति– पड़ोसन

केदार– शैलू के पिता।

पुरुष– रास्ते से निकलने वाला।

महिला– पड़ौस की गृहिणी।

स्थान– रजनी का घर।

(रजनी आँगन में बर्तन धो रही है। दूसरी तरफ शैलू और रजनी में छोटी–छोटी बातों पर झगड़ा हो रहा है।)

प्रिया– भैया! देखो तुमने अपनी गीली और गन्दी बनियान धुले कपड़ों में रख दी है।

शैलू– मेरी बनियान, उसे मैं कहीं भी रखूँ। तुझे मतलब...?

प्रिया– मतलब कैसे नहीं है। घर की सफाई तो मैं ही करती हूँ।

शैलू– बड़ी सफाई करती है। कई चीजें तो (फेंकने का संकेत करके) साफ ही हो जाती हैं।

प्रिया– ठीक है ठीक है। ये गन्दे बर्तन माँ को देकर आओ। जहाँ खाते हो बर्तन वहीं छोड़ देते हो।

शैलू– तुम्ही उठा लो।

प्रिया– (जोर देकर) नहीं, अपनी थाली तुम्हें ही उठानी होगी, लो (जूठे बर्तन शैलू को पकड़ाती है। शैलू मन मानकर बर्तन लेता है)

प्रिया– (पुस्तकें ठीक करते हुए) देखो भैया तुम्हारी पुस्तकें कहीं पड़ी हैं और बैग कहीं पड़ा है। स्मरण है। हमारी दीदी ने बताया था कि हर चीज अपने स्थान पर रहनी चाहिए तभी घर साफ दिखता है।

शैलू– (खिल्ली उड़ाने के लहजे में) अरे वाह! दीदी की हर बात मानने के लिए होती है? मुझे नहीं ज्ञात था।

प्रिया– लेकिन यह बात मानने लायक है या नहीं बता? पुस्तकों को अच्छे से रखना आवश्यक नहीं है?

शैलू– सोचूँगा।

प्रिया– बाद में सोचना पहले यह काम करो भैया। इसमें माँ को सहायता मिलेगी। वे हमारे लिए दिनभर काम करती हैं कि नहीं....?

केदार– (बाहर से आते हुए) पिंकी सही तो बोल रही है शैलेन्द्र!

शैलू– (चिढ़कर) हाँ आप तो हमेशा इसी की तरफदारी करते हैं।

केदार– यह बात नहीं है बेटा। सही बात पर मैं तेरी तरफदारी भी तो करता हूँ कि नहीं? चलो बेटा अब दोनों अपना–अपना बिखरा हुआ सामान समेटो। (शैलू और प्रिया सारा सामान व्यवस्थित कर देते हैं।)

शैलू– (बहिन से) प्रिया! आज कोई आने वाला है क्या?

प्रिया– नहीं तो, क्यों?

शैलू– तुम आज सफाई पर इतना जोर जो दे रही हो।

प्रिया– अरे भैया! क्या हम घर की सफाई तभी करेंगे, जब कोई आएगा? कल शाला में दीदी ने हमें देर तक सफाई के बारे में समझाया था। बोलीं कि हमारे रहन–सहन से हमारे विचारों और जीने के प्रकार का पता चलता है। हमारा व्यक्तित्व झलकता है।

यह आवश्यक नहीं है कि घर को महँगी चीजों से ही सँवारा जाए। आवश्यक केवल इतना है कि हर चीज साफ और व्यवस्थित हो। (अन्दर से रजनी पुकारती है।)

रजनी– अरी प्रिया! ये कचरा ले जा और बाहर फेंक दे।

शैलू– (प्रिया से) चलो! तुम यहाँ सफाई करो, कचरा फेंकने मैं चला जाता हूँ।

प्रिया– (प्रसन्न होकर) मेरे अच्छे भैया! चलो, सफाई के बारे में तुमने कुछ तो सीखा। (शैलू बाल्टी भर कचरा बाहर गली में फेंकता है पर कुछ कचरा एक आदमी पर उड़ता है जिसे शैलू देख नहीं पाता।

पुरुष– (नाराज होकर चिल्लाते हुए) अरे! बड़ा बदतमीज लड़का है। देखे बिना ही कूड़ा फेंक दिया। यह कोई तरीका है? (शैलेन्द्र जल्दी से अन्दर चला जाता है।)

पुरुष– (और भी तेजी से) अरे! देखो तो क्षमा माँगने की बजाय लड़का घर में भी घुस गया। पर जाएगा कहाँ मैं छोड़ने वाला नहीं हूँ।

पुरुष– (दरवाजे पर आकर) ए, ए, लड़के... बाहर निकल। (आवाज सुनकर केदार बाहर आता है।)

केदार– क्या समस्या है भाई साहब? क्यों चिल्ला रहे हैं?

पुरुष– गनीमत है कि मैं केवल चिल्ला ही रहा हूँ। आपके बेटे को थप्पड़ नहीं लगा रहा।

रजनी– (बाहर आते हुए) अरे! ऐसे कैसे लगा दोगे थप्पड़? हैं कौन आप?

केदार– (रजनी से) तुम ठहरो मैं बात कर रहा हूँ। (पुरुष से) हाँ भाई साहब बताइए क्या बात है?

पुरुष– बात यह है कि आपके बच्चे ने बिना

देखे ही कचरा फेंका है। ये देखिए मेरे कपड़े गंदे हो गए हैं।

केदार– (हाथ जोड़कर) क्षमा करें। यह तो सचमुच बड़ी गलती हुई है।

पुरुष– इससे भी बड़ी गलती है घर के कचरे को गली में डालना। आपको या किसी को भी गली में कचरा नहीं फेंकना चाहिए।

रजनी– अरे क्यों नहीं फेंकना चाहिए? क्या गली आपकी है? (तभी एक महिला वहाँ आ जाती है।)

महिला– (पुरुष से) इन्हें समझाना बेकार है भाई साहब! इनका तो काम है अपने घर की गन्दगी बाहर फेंकना। बासी सब्जी, चावल, खिचड़ी, रोटी सड़े फल कुछ भी हो घर से बाहर निकाल कर छुट्टी। चाहे बाहर मक्खियाँ भिनभिनाती रहें।

रजनी– तुम्हारे दरवाजे पर तो अब कचरा नहीं डालते न। अब पूरी गली की जिम्मेदारी तो नहीं है न हमारी। गली तो सरकारी है।

पुरुष– यह बुरी बात है। गली सरकारी है तो क्या हुआ। उसका उपयोग तो हम लोग ही करते हैं। और न भी करें तो भी केवल सरकारी मानकर ऐसा आचरण तो गलत है कि अपना घर स्वच्छ रखो और गन्दगी बाहर डाल दो। सफाई कर्मचारी रोज नियम से सफाई करने व कचरा भरने आते हैं। अपने आसपास को साफ–स्वच्छ रखने में हमें उन्हें पूरा सहयोग देना चाहिए। कचरा भी कचरे के डिब्बे में ही डालना चाहिए। आखिर यहाँ रहते तो हम ही हैं। (केदार से) क्यों भाई साहब! क्या मैं गलत कह रहा हूँ?

केदार– जी नहीं! आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। बहुत धन्यवाद कि आपने हमारे बच्चों को अच्छी बात सिखाई है। अब वे आगे से कभी गली में कचरा नहीं फेकेंगे। है न सल्लू!

शैलू– (सिर झुकाए) जी पिताजी! (पुरुष से) गलती हो गई। आप मुझे क्षमा करें काका!

पुरुष– (मुस्कराकर प्यार से) कोई बात नहीं बेटे! गलती होना इतना बुरा नहीं, पर जानकर उसे न सुधारना बहुत बुरा है।

– ग्वालियर (म. प्र.)

पुरस्कार

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२५

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा। आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२५ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम– १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र–४०, संवाद नगर, इन्दौर–४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२५

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे– प्रथम १५००/– द्वितीय ११००/– तृतीय १०००/–
प्रोत्साहन (२) ५००/– ५००/–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२५ से दिसम्बर २०२५ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'यात्रा वृत्तान्त' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित यात्रा वृत्तांत की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/– होगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२५

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'भारतीय कुटुम्ब व्यवस्था विषय पर केन्द्रित बाल कहानियाँ' निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे– प्रथम १५००/– द्वितीय १२००/– तृतीय १०००/–
प्रोत्साहन (२) ५००/– ५००/–

मोदी जी की गारंटी
यानी गारंटी पूरी होने की गारंटी
"हर संकल्प पूरा करने को प्रतिबद्ध" - डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
मध्यप्रदेश संकल्प पत्र 2023 में उल्लेखित कुछ प्रमुख संकल्प
सशक्त नारी
पात्र बहनों को आर्थिक सहायता एवं पक्का आवास
15 लाख महिलाओं को लखपति योजना में कौशल प्रशिक्षण देकर बनायेंगे लखपति
लाड़ली लक्ष्मियों को 21 वर्ष तक कुल ₹ 2 लाख
पात्र बहनों को ₹ 450 में गैस सिलेण्डर
बीपीएल परिवार की बेटियों को केजी से पीजी तक मुफ्त शिक्षा
समृद्ध किसान
किसानों को पीएम किसान एवं मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में ₹ 12,000 की प्रतिवर्ष सहायता
₹ 2700 प्रति क्विंटल गेहूं एवं ₹ 3100 प्रति क्विंटल धान की खरीद, बोनस भी
जनजातीय कल्याण
₹ 3 लाख करोड़ से जनजातीय समुदाय का सशक्तिकरण
तेंदूपत्ता संग्रहण दर बढ़कर होगी ₹ 4,000 प्रति बोरा
हर एसटी ब्लॉक में एकलव्य विद्यालय
एसटी बहुल मंडला, खरगोन, धार, बालाघाट एवं सीधी जिले में मेडिकल कॉलेज की स्थापना
₹ 100 करोड़ से पूजा स्थलों का विकास एवं नवीनीकरण
सुशासन एवं कानून व्यवस्था
कमिश्नर प्रणाली भोपाल एवं इंदौर के बाद जबलपुर और ग्वालियर में होगी लागू
भोपाल में राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय का निर्माण
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
सबका साथ, सबका विकास
5 वर्षों तक मिलता रहेगा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का लाभ
प्रधानमंत्री आवास योजना के साथ ही मुख्यमंत्री जन आवास योजना में पक्के आवास
वरिष्ठ एवं दिव्यांग जन को ₹ 1500 मासिक पेंशन
गिग वर्कर्स के कल्याण एवं अधिकारों के लिए बोर्ड
पीएम विश्वकर्मा योजना में पारंपरिक कारीगरों को ₹ 15 हजार की वित्तीय सहायता, ₹ 500 दैनिक भुगतान
असंगठित श्रमिकों के लिए ई-श्रम पोर्टल, आयुष्मान भारत का 100% पंजीकरण
उत्तम शिक्षा एवं सक्षम युवा
गरीब परिवारों के छात्रों को कक्षा 12 तक मुफ्त शिक्षा
मिड-डे मील के साथ पौष्टिक नाश्ता भी
हर संभाग में IIT की तर्ज पर मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
हर परिवार में कम से कम एक युवा को रोज़गार-स्वरोज़गार
मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना में कौशल प्रशिक्षण एवं ₹ 10 हजार तक स्टाइपेंड
हर जिले में एक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स
स्वस्थ प्रदेश
आयुष्मान योजना में ₹ 5 लाख से ऊपर खर्च होने पर प्रदेश सरकार उठाएगी इलाज का खर्च
₹ 20,000 करोड़ से सुधारू होंगी स्वास्थ्य सुविधाएं
हर संभाग में एम्स की तर्ज पर मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस की स्थापना
हर संसदीय क्षेत्र में मेडिकल कॉलेज एवं 2,000 मेडिकल सीटों की वृद्धि
सुदृढ़ आधारभूत संरचना
क्षेत्रीय विकास के लिए बुंदेलखंड, विंध्य एवं महाकौशल विकास बोर्ड
अटल गृह ज्योति योजना में ₹ 100 में 100 यूनिट बिजली
विंध्य एक्सप्रेसवे, नर्मदा पथ, अटल प्रगति पथ, मालवा-निमाड़ पथ, बुंदेलखंड पथ एवं मध्य भारत विकास पथ का निर्माण
80 रेलवे स्टेशनों का विश्वस्तरीय आधुनिकीकरण
वंदे मेट्रो एवं वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का विस्तार
रीवा, सिंगरौली एवं शहडोल में हवाई अड्डे
भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर में मेट्रो रेल
सांस्कृतिक धरोहर एवं विकसित पर्यटन
संत शिरोमणि गुरुदेव श्री रविदास जी का स्मारक निर्माण एवं ₹ 150 करोड़ से धरोहर संरक्षण मिशन शुरू करके ऐतिहासिक स्मारकों का नवीनीकरण
सभी जनजातीय नायकों के भव्य स्मारकों का निर्माण
13 सांस्कृतिक लोकों का निर्माण
नमामि नर्मदे परियोजनाएं शीघ्र होंगी पूर्ण
₹ 7,500 करोड़ के निवेश के साथ 2 लाख युवाओं को पर्यटन के क्षेत्र में प्रशिक्षण, रोज़गार तथा स्वरोज़गार के अवसर
प्रगतिशील अर्थव्यवस्था एवं औद्योगिक विकास
अगले 7 वर्ष में प्रदेश को ₹ 45 लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था बनायेंगे
₹ 20 लाख करोड़ का निवेश लाकर प्रति व्यक्ति आय करेंगे दोगुनी
एक्सप्रेस-वे के पास औद्योगिक कॉरिडोर का निर्माण कर 4.50 लाख से अधिक युवाओं को रोज़गार और स्वरोज़गार के अवसर
10 नए एमएसएमई क्लस्टरों का निर्माण एवं ₹ 5 हजार करोड़ के निवेश के साथ एमएसएमई उद्योगों को न्यूनतम दर पर ऋण
एमपी के मन में मोदी
सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास
R. O. No. D161105/25

हर गरीब बेघर को घर का उपहार- गरीबों को घर देने में मप्र में आगे

अपने घर का सपना संजोये गरीब परिवारों की उम्मीदें पूरी करने में मध्यप्रदेश सरकार ने देश में सर्वोत्तम प्रदर्शन किया है। विकास की रेल में डबल इंजन लगने से गति तीव्रतम हो गई है। मध्य प्रदेश को प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में 38 लाख 415 आवास निर्माण लक्ष्य मिला था। अब तक 36 लाख 40,371 आवास बनाकर मध्य प्रदेश देश में दूसरे स्थान पर आ गया है। 3.79 लाख आवासों का निर्माण चल रहा है।

जनजातीय परिवारों में आई खुशी

प्रदेश के गुना जिले की ग्राम पंचायत मूंदरा खुर्द में रहने वाली सहरिया जनजाति के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) परिवर्तनकारी साबित हुई। कच्चे टूटे मकान में रहने वाले सहरिया परिवारों के अब पक्के मकान हैं। उन्होंने अपने आशियाने को नीले रंग से रंगा। दूर से ही उनके मकान पहचाने जा सकते हैं। ग्राम पंचायत मूंदरा खुर्द की कृष्णा बाई कहती हैं कि प्रधानमंत्री आवास योजना से उनकी गरिमा बढ़ी है।

गुणवत्ता के लिये कड़ी निगरानी

मकान के निर्माण के विभिन्न चरणों की जियोटैग्ड तथा टाईम स्म्पटैड फोटोग्राफ को वित्तीय सहायता राशि की अगली किश्तों की रिलीज के साथ जोड़ा जाता है। फोटोग्राफ को निर्माण की गुणवत्ता तथा आवासों के पूरा होने की समीक्षा के लिए उपयोग किया जाता है। लाभार्थियों के निर्धारण से लेकर मकान के निर्माण तक से जुड़ी सहायता प्रदान करने तक के कार्य एमआईएस आवाससॉफ्ट पर किए जाते हैं। लाभार्थियों के खाते में भुगतान प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से किया जाता है। योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए कई स्तरों पर निगरानी की जाती है।

R. O. No. D16105/25

भारतीय ज्ञान परम्परा और हमारा दायित्व

बालवाटिका की बालसाहित्य संगोष्ठी

भूणास (भीलवाड़ा) दिनांक ४–५ नवम्बर २०२५। डॉ. भेरूँलाल गर्ग के संपादकत्व में ३० वर्षों से निरंतर प्रकाशित बाल पत्रिका बालवाटिका की २६वीं राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में भारतीय ज्ञान परम्परा और हमारा दायित्व विषय पर केन्द्रित दो दिवसीय महत्वपूर्ण आयोजन विनायक विद्यापीठ भूणास में सम्पन्न हुआ। यह राजस्थान बाल साहित्य अकादमी, बाल वाटिका एवं विनायक विद्यापीठ का संयुक्त आयोजन था।

उद्घाटन सत्र में श्री. दामोदर अग्रवाल (सांसद) श्री. शिव मृदुल (साहित्यकार व शिक्षाविद्) श्रीकृष्ण 'जुगनू' (भारतविद्) ने प्रमुख रूप से मार्गदर्शन किया। तत्पश्चात् विविध सत्रों में देश के आठ प्रांतों से ३० ख्यात बाल साहित्यकारों ने सहभागिता की जिनमें सर्वश्री दिनेश प्रतापसिंह 'चित्रेश', रमेशचन्द्र पंत, भगवतीप्रसाद गौतम, डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय, उमेश चौरसिया, सत्यनारायण 'सत्य', डॉ. हुंदराज बलवाणी, महावीर रवाँल्टा, डॉ. लता अग्रवाल, गोपाल माहेश्वरी, नीना सोलंकी, सतीश व्यास, डॉ. भँवरलाल शर्मा 'प्रेम', पं. नन्दकिशोर निर्झर, श्रीमती विमला रस्तोगी, श्रीमती आशा पाण्डेय ओझा, विष्णु शर्मा 'हरिहर' डॉ. सूर्यनाथसिंह, यशपाल शर्मा, उदय किरोला श्रीमती विमला नागला, श्री. श्याम नारायण श्रीवास्तव सहित अनेक बाल साहित्यकारों ने सहभागिता की।

श्री. श्यामप्रकाश देवपुरा श्री. राजेन्द्र ओस्तवाल, श्री. लक्ष्मीनारायण दाड़ एवं डॉ. श्यामसुंदर भट्ट ने समापन सत्र में मार्मिक मार्गदर्शन किया। संचालन श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' ने किया।

इस अवसर पर डॉ. दिविक 'रमेश', डॉ. हुन्दराज बलवाणी, श्री. रमेशचंद्र पंत, डॉ. सूर्यनाथ सिंह, श्रीमती विमला रस्तोगी, श्री. महावीर रवांल्टा, श्री. पवन पहाड़िया, श्रीमती प्रतिभा शर्मा, श्री. विष्णु शर्मा 'हरिहर', श्रीमती विमला नागला, श्री. गोपाल माहेश्वरी, श्री. श्याम नारायण श्रीवास्तव, डॉ. लता अग्रवाल, श्री. पवनकुमार वर्मा, श्री. श्यामसुंदर त्रिपाठी 'मधुप' एवं श्रीमती कीर्ति शर्मा को बाल साहित्य सम्मान प्रदान किए गए। सम्पूर्ण आयोजन श्री. भेरूँलाल जी गर्ग व श्री. देवेन्द्र जी कुमावत के कुशल मार्गदर्शन में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

इन्वेस्ट मध्यप्रदेश
अनंत संभावनाएं
उद्योग एवं रोज़गार वर्ष 2025
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
प्रदेश के कृषि फीडर्स को सौर ऊर्जीकृत करने का अभियान
नवीकरणीय ऊर्जा से समृद्ध होता मध्यप्रदेश
व्यापक निवेश अवसर
सूर्य मित्र कृषि फीडर योजना
योजना के प्रमुख उद्देश्य
• मध्यप्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी को कम मूल्य पर बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित कराना
• ट्रांसमिशन हानि कम करना एवं सीधे खपत स्थल पर बिजली पहुंचाना
• 33/11 केवी उपकेंद्रों पर ओवरलोडिंग, लो-वोल्टेज और पावर कट की समस्या कम करना
• किसान को सिंचाई के लिये दिन में बिजली उपलब्ध कराना
नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार
• सब-स्टेशन की 100% क्षमता तक की परियोजनाओं की स्थापना
• परियोजनाओं को पीएम कुसुम-सी योजनांतर्गत उपलब्ध केंद्रीय अनुदान का लाभ लेने का विकल्प
• 1900 से अधिक विद्युत सबस्टेशन एवं 14500 मेगावॉट क्षमता सौर परियोजनाओं के चयन हेतु उपलब्ध
• पीएम कुसुम योजना में 3.45 लाख पम्प का लक्ष्य
• वोकल फॉर लोकल - स्थानीय उद्यमियों के लिए निवेश एवं रोज़गार सृजन का उचित अवसर
• वित्त पोषण की सुगमता के लिए बैंकों से समन्वय
• परियोजनाओं में AIF के तहत 7 वर्षों तक 3% ब्याज में छूट
• Reactive Power प्रबंधन से अतिरिक्त आय
R. O. No. D16105/25

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०२५ | प्रेषण तिथि ३०/१०/२०२५ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

प्रकृति के सम्मान का उत्सव

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

गौ-संरक्षण एवं **संवर्धन** के लिए
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
की **अभिनव पहल**

प्रदेशभर की
गौ-शालाओं में
गोवर्धन पर्व का
सामुदायिक आयोजन

प्रगति और पर्यावरण
के प्रति सजगता की
मिसाल बनता
मध्यप्रदेश

- प्रदेश में संचालित 1,500 से अधिक गौ-शालाओं में 3.30 लाख गौ-वंश का पालन। शीघ्र ही लगभग 2,500 नई गौ-शालाएं प्रारंभ होंगी जिनमें 4.50 लाख गौ-वंश का पालन हो सकेगा।
- गौ-वंश के बेहतर आहार हेतु प्रति गौ-वंश 20 रुपये की राशि बढ़ाकर 40 रुपये की जा रही है।
- दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के बीच एमओयू। आगामी 5 वर्ष में लगभग 12,000 दुग्ध समितियां 25 लाख लीटर दूध एकत्रित करेंगी।
- देश में सर्वाधिक 15 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक खेती करने वाले मध्यप्रदेश में गौ-वंश को प्रोत्साहन देने की पहल से जैविक खेती उत्पादन बढ़ेगा।
- दुग्ध उत्पादन और ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर ब्लॉक में एक 'वृंदावन ग्राम' बनेगा।
- गौ-शालाओं का बजट 150 करोड़ से बढ़ाकर 250 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष एवं मुख्यमंत्री पशुपालन विकास योजना में 195 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।
- ग्वालियर स्थित आदर्श गौ-शाला में देश के पहले 100 टन क्षमता वाले CNG प्लांट की स्थापना।

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2024

R. O. No. D16105/25

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी